दिसंबर (प्रथम) 2020 | ₹ 30.00

चंपक

सब्सक्राइब करने के लिए 8588843437 पर मैसेज भेजें.
या देखें delhipress.in
अगला 'ई एडिशन फ्री' पाने के लिए ऊपरी नंबर पर मैसेज भेजें.

VISIT…

SUNCARE

A WHO GMP COMPANY

SURE SAFE SECURE

Now Available on 1mg

स्वास्थ्य का रखे ख्याल जीवन रहे खुशहाल

आपकी सेवा में 25 साल का भरोसा

STOMAFIT®

Tablets & Liquid

एसिडीटी, गैस, बदहज़मी, उल्टी, पेट दर्द, ढ़ीला पैखाना, डायरिया, कब्ज, आँव, इत्यादी !

HAEMOCAL*

Delicious Taste

Iron Tonic Loaded with Glucose

खून व ताकत बढ़ाऐ

COVISAFE

Rinse-Free & Non-Sticky

Kills germs without water.

जब हाथ सुरक्षित रहेंगे तभी हम सुरक्षित रहेंगे

Suntuss

गले में खराश, सूखी खाँसी, बलगम, हरारत व ऐलर्जी वाली खाँसी में आराम पहुँचाने में प्रभावशाली एवं गुणकारी दवा

Scabicid*

LOTION

सिर की जूँओ,रूसी व स्केबीस का नाशक

PYROGUM

TOOTH DROPS

मसूड़ों से खून बहना बंद करे

CLEAR ON XTRA

With Aloe & Allantoin

इसके एंटिबायटिक गुण कील-मुहाँसो को भगाने में मदद करते हैं

Geltop

Antiseptic & Pain Relieving Mouth Ulcer Gel

इसके एंटिसेपटिक गुण मुँह के छालो को सफाया करने में मदद करते हैं

SALTEX®

दाद, खाज, खुजली व एक्जिमा को दूर करे

FLAMISUN™

GEL & SPRAY

चोट, मोच, गठिया, कमर दर्द, सूजन, स्पोर्टस इन्जरी, गुम चोट के दर्द में जल्द आराम पहुँचाऐ

Pain RELIEF

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन:8447977889/999, 011-46108735,

मेल:info@stomafit.com

फ्री होम डिलीवरी 8447977999

Bevitone

Multivitamins, Multiminerals & Iron Supplements Capsules

मल्टीविटामिन, मिनरल्स एवं आयरन का भंडार जो बनाए शरीर ताकतवर व उर्जावान

Follow us at https://www.facebook.com/SuncareGroup https://twitter.com/Suncare_Group https://www.instagram.com/suncare_group

चंपक

दिसंबर (प्रथम) 2020 अंक : 1202

संस्थापक
विश्वनाथ
1917–2002

सुनो कहानी

नया दोस्त	4
यादगार ऊंट मेला	9
दूर के ढोल सुहावने	14
लाल रिबन का रहस्य	19
बच्चों के मानवाधिकार	26
जब दोनों टीमें जीत गईं	31
आशिनी का बंबलबी बैग	39
सही खजाना	48

मुखपृष्ठ

क्या आप ने कभी ऊंट की सवारी की है? अद्भुत यादगार के लिए यह शौक की सवारी है. अगर आप ने यह सवारी नहीं की है तो इस का मजा लेने की कोशिश करें. यह अद्भुत सवारी आप को बेहतर दृश्य उपलब्ध कराती है.

मन बहलाओ

सुंदर रंग भरो	8
देखो हंस न देना	16
बताओ तो जानें	18
याददाश्त बढ़ाएं	23
बिंदु मिलाओ	30
चित्र पूरा करें	34
रास्ता बताओ	35
स्मार्ट	36
प्रदूषण को मात दें	38
अंतर बताओ	46
पर्वत की ऊंचाई मापें	47

चित्र कथाएं

डमरू और कौफी	13
चीकू	24
दादाजी और विश्व विकलांगता दिवस	42

विशेष पृष्ठ

मजेदार विज्ञान	17
नन्ही कलम से	44

संपादक व प्रकाशक ● परेश नाथ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा -121003 से मुद्रित. संपादक - परेश नाथ.
Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.

चंपक में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजना आवश्यक हैं अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं की सुरक्षा/वापसी के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है. वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. एक प्रति रु. 30.00 (बिना सीडी के),
वार्षिक रु. 576, दो वर्ष रु. 1050. (भारत में)

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें:
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 91-11-41398888, एक्स. नं. 119, 221, 264.
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप: 08588843408
ईमेल: subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, वडाला उद्योग भवन, नैगांव क्रौस रोड, वडाला मुंबई-400031. फोन : 91-22-24122661, 43473050.

- रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
- निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
- संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress. biz
- ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा क्राफ्ट्स यहां भी भेज सकते हैं :
writetochampak@delhipress.in या एसएमएस करें : 09619587613
www. facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/ user/ ChampakSciQ

नया दोस्त

कहानी ● इलिका प्रिय

चीकू खरगोश को प्यास लगी थी. वह निकट के तालाब में पानी पीने गया. दोपहर का समय था, वहां उस के सिवा और कोई नहीं था. तेज धूप के कारण गरमी भी लग रही थी. उस ने सोचा, 'जल्दी से पानी पी कर मैं घर लौट जाऊंगा.' उस ने जैसे ही पानी पीने के लिए तालाब में मुंह डाला एक भयानक आवाज सुन कर वह उछल पड़ा. ऐसा लगा जैसे किसी खतरनाक जानवर ने फुफकार मारी हो.

उस ने सिर उठा कर उस तरफ देखा, पानी की सतह में बुलबुले उठ रहे थे. वहां कोई नहीं था. वह दो मिनट तक उस ओर टकटकी लगाए देखता रहा पर वहां कोई नजर नहीं आया.

'कहीं मगरमच्छ तो नहीं,' उस ने मन ही मन कहा. मगरमच्छ यहां नहीं आ सकता. उसे पूरा यकीन था.

वह फिर पानी पीने लगा, तभी जोर से फिर फुफकारने की आवाज आई. उस ने झट से सिर उठा कर देखा, हवा में पानी के बुलबुले उड़ते नजर आए, अगले ही पल किसी ने पानी से अपना सिर बाहर निकाला.

''बाप रे, यह कौन सा जानवर है? डर के मारे वह दुम दबा कर भागा और झाड़ियों में छिप कर उसे देखने लगा.

वह अजीब सा जीव था. वह अपना सिर पानी से बाहर निकालता और फिर तालाब के किनारे पानी में घुसता और अगले ही पल दूसरे किनारे से सिर बाहर निकालता, कुछ देर तक यही सब चलता रहा. उस के बाद वह पानी से बाहर निकला तो उसे देख कर चीकू की सिट्टीपिट्टी गुम हो गई.

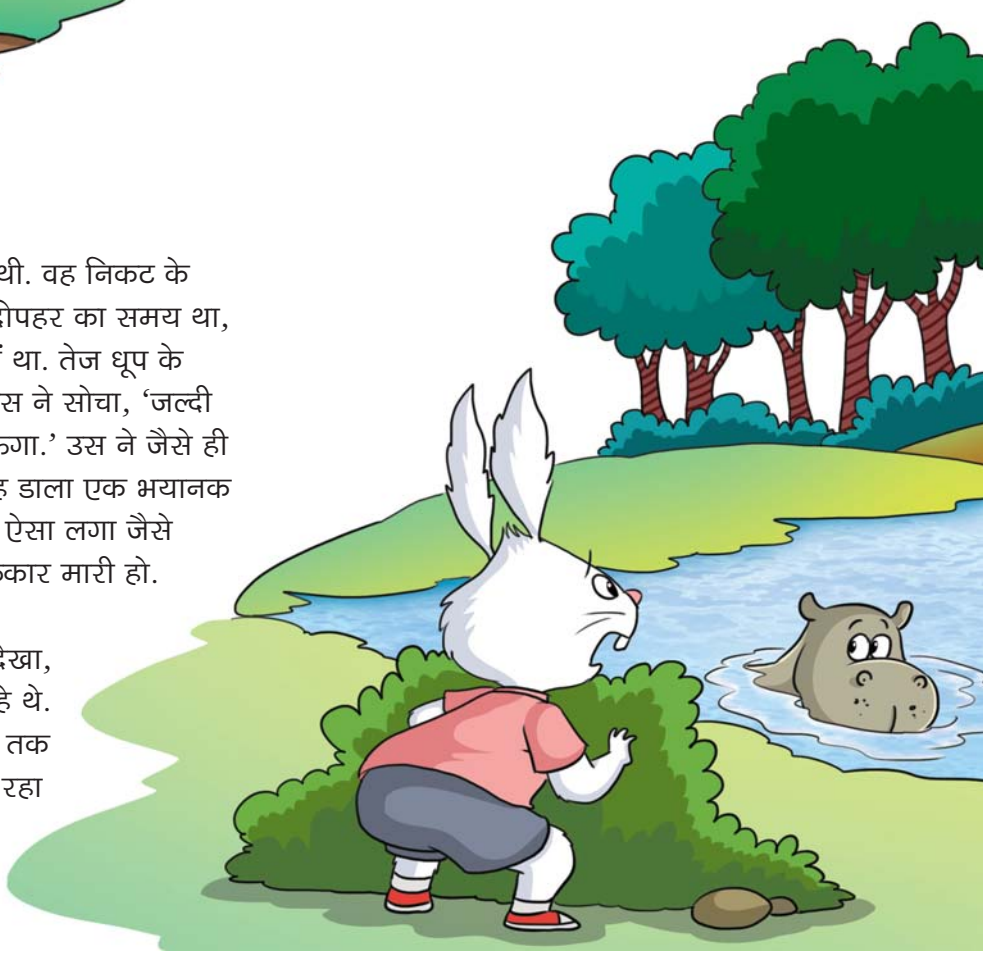

वह हाथी जैसा भारीभरकम लग रहा था. उस के छोटेछोटे चार पैर थे. वह घास खाने लगा. अब चीकू को थोड़ी राहत मिली.

यह शाकाहारी जीव था, यह सुस्त जीव जान पड़ता है, क्योंकि इस का शरीर बड़ा है और छोटे पैर हैं.

अब चीकू को उस से डर नहीं लग रहा था, अभी चीकू ऐसा सोच ही रहा था कि वह फिर फुफकारने लगा. चीकू ने देखा, वह अपने नथुने फुला रहा था और उसे घूर रहा था.

''भाग जाओ यहां से, कौन हो तुम? मुझे तुम पर गुस्सा आ रहा है, भाग जाओ,'' वह बोला. उस की बात सुन कर चीकू डर गया. वह हिम्मत कर के बोला, ''तुम कौन हो और यहां क्या कर रहे हो? यह हमारा जंगल है.''

उस ने चीकू की ओर घूर कर देखा. फिर पानी में जा घुसा. चीकू अब इतना समझ गया था कि यह जानवर उस का कुछ नहीं बिगाड़ सकता, क्योंकि चीकू तो तेज दौड़ सकता है लेकिन यह भला उस के मुकाबले कहां दौड़ सकेगा.

''तुम ने बताया नहीं कि तुम कौन हो? तुम हाथी तो नहीं?'' चीकू फिर बोला.

''मैं ने कहा न, भाग जाओ यहां से वरना दौड़ा कर मारूंगा,'' उस ने कहा.

चीकू को हंसी आ गई, वह बोला, ''बेवकूफ, तुम मुझे नहीं दौड़ा सकते, मैं खरगोश हूं. तेज दौड़ने वाला,'' चीकू का इतना कहना था वह तेज दौड़ता हुआ आया. शुक्र था कि चीकू उस से भी तेज दौड़ सकता था नहीं तो आज उस का कचूमर ही बन जाता. चीकू को दौड़ा कर वह फिर पानी के अंदर चला गया. चीकू डर के मारे कांप रहा था. वह झाड़ियों में छिप गया.

''मुझे माफ करना, मैं बहुत दुखी हूं. इसलिए गुस्से में भी हूं,'' उस ने जोर दे कर कहा. चीकू झाड़ियों से बाहर आया, उस का उदास चेहरा देख कर चीकू को उस से सहानुभूति हो गई.

चीकू मिलनसार प्राणी था, दुखी होने की बात सुन कर वह बोला, ''तुम अपनी परेशानी बताओगे तो मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूं,'' अब की बार वह नरम हो कर बोला, ''मैं हिप्पो हूं,''

''हिप्पो,'' चीकू चौंक कर बोला, ''अरे, मैं जानता हूं तुम्हारे बारे में, तुम हाथी और गैंडे के बाद धरती के तीसरे सब से बड़े स्तनधारी जीव हो और तुम्हारी लंबाई 12 फीट और चौड़ाई 5 फीट होती है और तुम भारीभरकम हो. मैं सही कह रहा हूं न,'' हिप्पो ने हामी भरी.

''तुम कितने भारी हो यह मुझे नहीं पता है, हिप्पो,'' चीकू उत्सुक हो कर बोला, ''अपने बारे में कुछ बताओ न, हमारे जंगल में एक भी हिप्पो नहीं है,

इसलिए हमें तुम्हारे बारे में कोई जानकारी नहीं है.''

हिप्पो तैरता हुआ चीकू के निकट आया और बोला, ''मैं 3,500 किलोग्राम का हूं, पर मेरे वजन से मेरी क्वालिटी मत आंको. बहुत से हिप्पो 4,000 किलोग्राम के भी होते हैं. पर 30-32 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से दौड़ सकते हैं. हमारा भोजन घास है. प्रत्येक दिन रात में घूम कर हम अपना भोजन तलाशते हैं.''

चीकू ने मुंह फाड़ कर उसे देखा और बोला, ''तभी तो तुम्हारा वजन इतना ज्यादा है, लेकिन तुम इतना भारी होने के बाद भी पानी में कैसे तैरते हो?''

हिप्पो हंस कर बोला, ''मैं पानी में तैरता नहीं हूं दोस्त, बल्कि मैं इतना भारी हूं कि तुरंत पानी के नीचे चला जाता हूं और मेरा पैर सतह को छूने लगता है और वहां गुरत्त्वाकर्षण कम रहता है इस कारण मैं तेजी से चलने लगता हूं और एक बार में काफी दूरी तय कर लेता हूं. इस तरह मैं पानी में दौड़ता हूं और इसी कारण से मैं दरियाई घोड़ा कहलाता हूं.''

''अच्छा, मुझे लगा तुम मछलियों की तरह तैरते होंगे, पर तुम तो घोड़े की तरह हो, है न. तो तुम अब यहां जमीन पर आ जाओ, हमारे साथ तुम्हें ज्यादा मजा आएगा,'' चीकू के आमंत्रण पर हिप्पो मुसकराया और बोला, ''अरे, नहीं, नहीं. मैं घोड़ा नहीं हूं बल्कि तुम्हें मालूम नहीं है, मैं मछलियों का करीबी हूं. व्हेल मछली की खानदान से हूं. इसलिए पानी ही हमारा जीवन है. धरातल पर मैं रात में आता हूं. मीलों दूर चल कर खाना ढूंढ़ता हूं, पता है क्यों? क्योंकि रात में सूरज की रोशनी नहीं होती, जिस से हमें परेशानी होती है. रात को मैं भोजन की तलाश में छह मील तक पैदल चल सकता हूं मगर दिन में, ना बाबा ना. क्योंकि हमारी त्वचा बहुत संवेदनशील जो है.''

''तुम्हारी त्वचा संवेदनशील है, मैं ने सुना है कि वह इतनी मोटी होती है कि उस पर भाले का भी असर नहीं होता,'' चीकू हंसता हुआ बोला.

''यह बात सही है दोस्त. मेरी त्वचा सख्त भले ही है, पर सूर्य की रोशनी की तीव्रता को झेलने में वह कमजोर और संवेदनशील है. इसलिए हम दिन में 16 घंटे पानी में रहते हैं. हम पानी के अंदर 5 मिनट तक सांस रोके रह सकते हैं पर पानी से बाहर हम लंबे समय तक जीवित नहीं रह सकते. बिना पानी हम जी भी नहीं सकते,'' उस ने भावुक हो कर कहा और उदास हो गया.

चीकू ने प्यार से कहा, ''तुम चिंता मत करो. यहां मजे से रह सकते हो. जंगल के सारे जानवर तुम से खुश रहेंगे और तुम्हें अपना दोस्त समझेंगे. मैं सच कह रहा हूं दोस्त.''

हिप्पो ने उस की ओर देखा और बोला, ''मैं इसलिए दुखी नहीं हूं दोस्त कि मैं यहां नया हूं बल्कि इसलिए दुखी हूं कि मैं अपने झुंड से बिछुड़ गया हूं. मुझे उन की याद आ रही है. हम झुंड में रहने वाले

जानवर हैं,'' इतना कह कर वह फिर उदास हो गया.

''मैं उन के बगैर नहीं रह सकता,'' हिप्पो फिर बोला.

चीकू सोच में पड़ गया, जब हिप्पो ने बताया कि सारे हिप्पो 40-45 के झुंड में ही मजे से रहते हैं और जब अकेले रहेंगे तो गुस्सैल प्रकृति का होने के कारण उन्हें गुस्सा बहुत ज्यादा आएगा.

अब वह हिप्पो के लिए क्या कर सकता है, वह यही सोच रहा था. आखिर वह कैसे पहचान करेगा कि उस के इस बिछड़े दोस्त का परिवार कहां है?

काफी सोचने के बाद चीकू को एक उपाय सूझा. उस के चेहरे पर चमक आ गई. उस ने हिप्पो से कहा, ''तुम चिंता न करो दोस्त. मेरी एक दोस्त है, मिनी चिड़िया, वह उड़ कर उस जगह की खोज करेगी जहां पानी होगा क्योंकि तुम्हारा परिवार वहीं रहेगा, जहां उन के झुंड के रहने लायक पानी होगा, है न. तो इस की पहचान मिनी अच्छे से कर सकती है और इस तरह तुम्हारे परिवार का भी पता चल जाएगा और फिर हम लोग उस के बताए रास्ते पर चल पड़ेंगे.''

चीकू की बातें सुन कर हिप्पो का चेहरा खिल उठा. ''धन्यवाद दोस्त, तुम ने तो मेरी समस्या ही दूर कर दी. आज नहीं तो कल मैं जरूर अपने झुंड से जा मिलूंगा,'' हिप्पो इतना खुश हुआ कि वह पानी में छपाछप नाचने लगा. वह पानी को हाथपैर से उछाल रहा था और खरगोश के ऊपर छींटे मार रहा था. उस गरमी में चीकू को भी मजा आ गया. उस ने पहली बार हिप्पो देखा था और इस प्यारे हिप्पो दोस्त से मिल कर उसे बहुत मजा आया था. ●

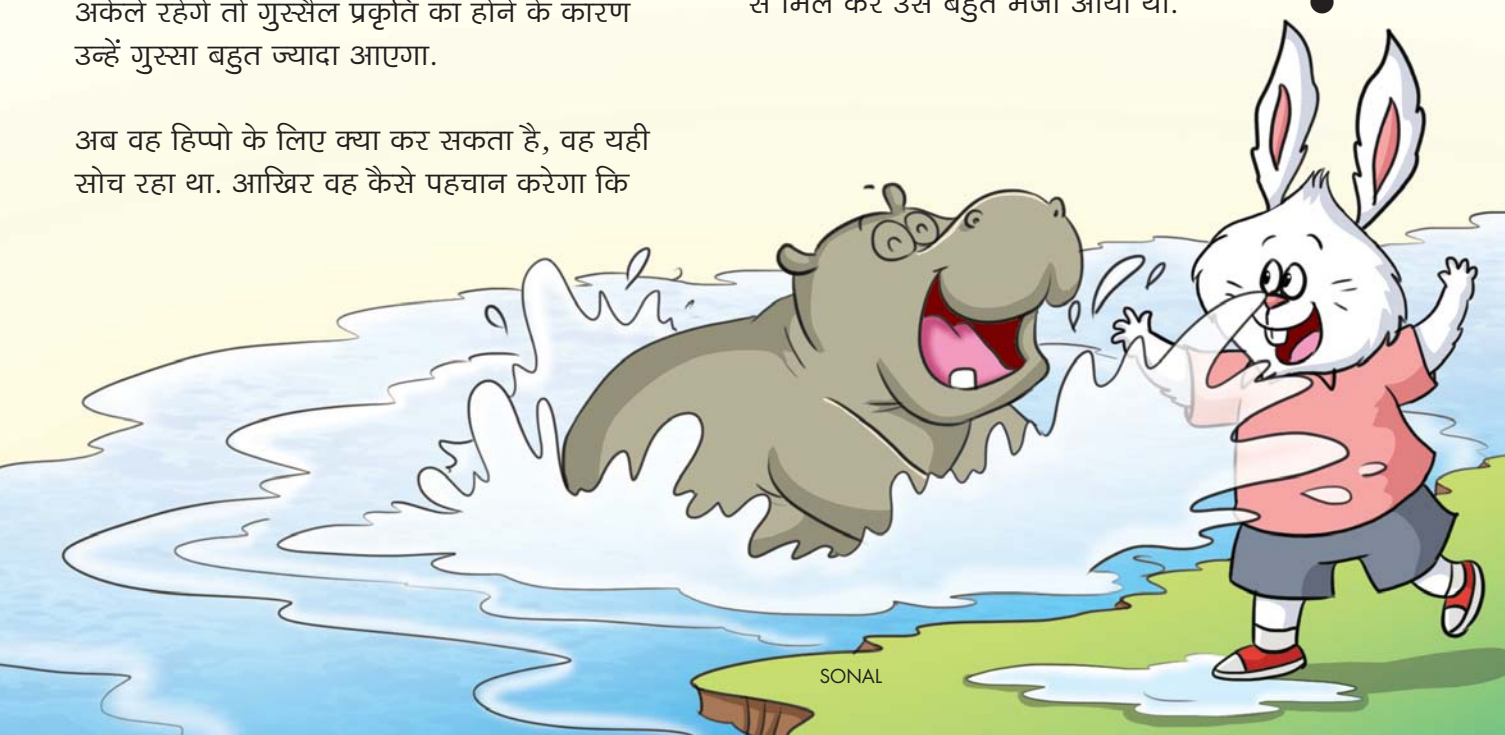

सुंदर रंग भरो

यादगार ऊंट मेला

कहानी ● ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

विकास ने देवांश से कहा, ''यदि तुझे यह ऊंट पसंद है तो हम इस की दौड़ करवा लेते हैं.''

देवांश भी पहले से दौड़ के सपने देख रहा था. उस ने झट से कहा, ''हां, करवा लो. मैं ऊंट पर बैठ कर दौड़ूंगा.''

देवांश झट से तैयार हो गया. वह मेला देखने पहली बार आया था और वह सभी ऐक्टिविटी में भाग ले कर मजे करना चाहता था.

''ठीक है, तुम ऊंट पर बैठ जाना. मैं तो यहीं माउंट आबू में रहता हूं. हर बार मेले में आता रहता हूं. इसलिए मुझे ऊंट पर बैठने का शौक नहीं है,'' विकास ने कहा.

उस के बाद उस ने ऊंट के मालिक से कहा, ''काकाजी, ऊंट की दौड़ करवा दी जाए?''

ऊंट का मालिक दौड़ करवाने के लिए राजी हो गया. उस ने कहा, ''क्यों नहीं विकास बाबू? मैं आप के लिए यह दौड़ करवा सकता हूं.''

उस ने अपने दोनों ऊंटों को जमीन पर बैठा दिया

और विकास से कहा, ''इन में से एक पर आप बैठ जाओ और दूसरे पर वह बैठ जाएंगा.''

''ठीक है, चलो, इस ऊंट पर मैं बैठ जाता हूं,'' एक सजे हुए ऊंट की ओर इशारा करते हुए देवांश ने कहा.

ऊंट लाल, पीले, हरे और नारंगी रंग के पारंपरिक राजस्थानी वस्त्रों से सजे हुए थे. उन की गरदन पर झालर लगी हुई थीं. उन के मुंह देखने में बहुत सुंदर लग रहे थे.

ऊंट मालिक ने देवांश की ऊंट पर चढ़ कर बैठने में मदद की. जैसे ही वह ऊंट पर बैठा, ऊंट वाले ने ऊंट को इशारा किया और ऊंट खड़ा हो गया.

विकास ने ऊंट पर न बैठने का निर्णय किया. उस ने कहा, ''मेरा ऊंट अकेला ही दौड़ेगा. इसलिए आप दौड़ शुरू कर सकते हो.''

ऊंट वाला दोनों ऊंटों को दौड़ाने के लिए खुले मैदान में लाया. उस के बाद उस ने तुरंत दौड़ शुरू कर दी.

देवांश पहली बार ऊंट पर बैठा था. उसे पता नहीं था कि ऊंट कैसे चलता है. जब ऊंट चलता है तो उस का शरीर कभी आगे तो कभी पीछे होता है और इस दौरान आगेपीछे तेजी से हिलता है. देवांश को इस बारे में मालूम नहीं था इसलिए उस ने उस की लगाम कस कर पकड़ रखी थी.

ऊंट दौड़ने में माहिर था. उस ने पहले धीरेधीरे दौड़ना शुरू किया फिर स्पीड पकड़ ली. विकास का ऊंट बिना सवारी के था इसलिए वह तेज दौड़ रहा था. देवांश का ऊंट उतनी तेज नहीं दौड़ रहा था. उस ने ऊंट की लगाम जोर से खींची जैसे ऊंट वाले ने देवांश को बताया था. अब ऊंट तेज दौड़ने लगा और इस कारण देवांश भी उस की पीठ पर तेजी से आगेपीछे हिलने लगा.

यह देख कर देवांश घबरा गया. उस ने सोचा कि अगर इसी तरह ऊंट दौड़ता रहा तो वह ऊंट से नीचे गिर जाएगा.

घबरा कर देवांश ने ऊंट की काठी जोर से पकड़ ली लेकिन लगाम उस के हाथ से छूट गई. ऊंट अब भी तेज दौड़ रहा था.

तभी वहां लोगों की भीड़ जमा हो गई थी और उन्होंने ऊंट पर बोली लगानी शुरू कर दी.

बोली लगाते हुए सभी लोग चिल्लाने लगे जिस से ऊंट और ज्यादा उत्साहित हो गए. वे पहले से भी तेज दौड़ने लगे. देवांश भी तेजी से आगेपीछे हिलने लगा. उस ने डर से काठी को सख्ती से खींचा और तभी ऊंट इतनी तेजी से आगेपीछे हुआ कि देवांश की कमर में लचक आ गई.

वह चीख पड़ा, ''अरे बाप रे, मेरी कमर टूट गई,'' चीखने के साथ ही उस का संतुलन बिगड़ गया और

उस के हाथ से काठी और लगाम दोनों ही छूट गए. ऊंट को भी झटका लगा.

इस वजह से उस के हाथ से काठी छूट गई थी इसलिए झटका खाने और संतुलन बिगड़ने से वह ऊंट की पीठ पर एक तरफ लटक गया था और काठी में लटकी रस्सी के पैडल में उस का पैर फंस गया और वह ऊंट के एक ओर लटक गया. लेकिन ऊंट अभी भी तेज दौड़ रहा था.

तभी भीड़ में से किसी ने उसे देखा और चिल्लाया, ''अरे, देखो, कोई बच्चा ऊंट पर लटका पड़ा है. उस को रोको. वह गिरने वाला है.''

विकास कुछ दूर से यह सब देख रहा था. वह इस स्थिति के लिए तैयार नहीं था. उस ने ऊंट वाले को पुकारा, ''काका, कुछ कीजिए, नहीं तो देवांश गिर जाएगा.''

ऊंट वाला इस घटना से बिलकुल अनजान था. विकास की बात सुन कर वह चौंका. उस ने देखा कि ऊंट तेजी से भाग रहा था और देवांश बहुत ही खतरनाक स्थिति में एक ओर लटका हुआ था, क्योंकि देवांश का एक पैर रस्सी फंसा हुआ था जिस वजह से वह लटका हुआ था. अगर उस का पैर पैडल से छूट जाता तो वह गिर कर ऊंट के पैरों के नीचे आ सकता था और घायल हो सकता था.

ऊंट वाला इस खतरनाक स्थिति को देख कर डर गया.

''अरे, यह क्या हो गया?'' वह चिल्लाया. वह इधरउधर देखने लगा. उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे. फिर वह ऊंट के पीछे दौड़ने लगा.

अब दर्शक हैरान थे, क्योंकि अब वहां का दृश्य बिलकुल ही बदल गया था. अब वहां ऊंट दौड़ देख कर मजे लेने की बात नहीं थी. अब उन को यह चिंता सता रही थी कि देवांश को खतरे से कैसे बचाया जाए? क्योंकि ऊंट तेजी से भाग रहा था और ऊंट वाला उस के काफी पीछे था. वह ऊंट को पकड़ नहीं सकता था.

देवांश मदद के लिए बचाओ, बचाओ चिल्ला रहा था. उस की आंखों से आंसू बह रहे थे. वह ऊंट के पिछले पैर से बारबार टकरा रहा था. जिधर वह लटका था, ऊंट के पैर से टकराने के कारण उसे जोर से झटके लग रहे थे.

तभी ऊंट वाले ने दौड़ते हुए अपने एक साथी को आवाज लगाई, ''अरे किशन, जल्दी आओ, दौड़ कर किसी भी तरह ऊंट को पकड़ने की कोशिश करो.''

किशन ऊंट के पीछे दौड़ने लगा. फिर उस ने अपने एक दोस्त को आवाज लगाई और कहा, ''अरे, सत्तू, इ ऊंट ने आवाज दे ने रोकिले.''

किशन ने यह बात सत्तू से अपनी स्थानीय भाषा में कही, जिस का मतलब है कि सत्तू, इस ऊंट का नाम पुकार कर इसे रोको.

तभी सत्तू तेजी से दौड़ते हुए चिल्लाया, ''अरे ओ कजरी, रुक जा.''

मगर कजरी नहीं रुकी. कजरी ऊंट का नाम था. तभी सत्तू को अपनी गलती का एहसास हुआ. वह फिर स्थानीय भाषा में ऊंट से बोला, ''कजरी, ढब जा.'' इस का मतलब था, कजरी ऊंट, तू रुक जा.

यह बात सुनते ही कजरी अचानक रुक गई, क्योंकि आवाज जानीपहचानी थी.

ऊंट के रुकते ही देवांश ने राहत की सांस ली. उस ने अपने पैर को देखा, वह अभी भी पैडल में फंसा हुआ था. उधर से किशन दौड़ता हुआ आया. कजरी के आते ही उस ने झट से देवांश को कंधे पर उठा लिया और बोला, ''बाबू, मैं आप को ऊपर उठाता हूं, आप काठी को पकड़ कर सीधे हो जाओ.''

इस तरह उस ने देवांश को पैडल से छुड़ाया. तब तक सत्तू भी वहां आ चुका था. उस ने कजरी को बैठना का इशारा किया. कजरी बैठ गई. लोग इस नजारे को सांस रोक कर देख रहे थे. एक बहुत बड़ी दुर्घटना होने वाली थी जो सत्तू और किशन की सूझबूझ से टल गई थी.

तभी विकास वहां आ गया. देवांश तब तक ऊंट से उतर गया था. उस का पैर छिल चुका था और पैडल के निशान बन गए थे और उस से खून बह रहा था. ऊंट वाले ने जख्म के ऊपर अपना साफा बांध दिया. विकास उसे तुरंत अस्पताल ले गया.

अस्पताल में डाक्टर ने देवांश को टिटनेस का इंजैक्शन लगा कर दूसरी पट्टी बांध दी. उस का पैर सूज गया था. देवांश और विकास को इस बात का डर सता रहा था कि पापा को पता चलेगा तो डांट पड़ेगी. लेकिन जब देवांश के पापा आए तो उन्होंने कहा, ''बेटा, जीवन में ऐसी मुसीबतें आती रहती हैं. उन से घबराना नहीं, बल्कि सामना करना चाहिए. फिर मेरा बेटा तो बहुत बहादुर बच्चा है. इस मुसीबत से बच गया.''

यह कह कर पापा हंस दिए. यह सुन कर विकास और देवांश के चेहरे पर मुसकान फैल गई. इस साल यह मेला उन के लिए यादगार बन गया था. ●

ऊंट मेला और त्योहार : राजस्थान में दिसंबर और जनवरी के महीने में कई ऊंट मेले और त्योहार आयोजित किए जाते हैं. इस तरह के आयोजनों के दौरान ऊंटों को चमकीले और पारंपरिक शाल पहनाए जाते हैं और सजावटी पायल पहनाई जाती हैं. ऊंट के मालिक भी बेहतरीन कपड़े पहनते हैं. इस मेले की विशेषता ऊंटों की दौड़, नृत्य प्रतियोगिताएं हैं जब ऊंट अपने मालिकों के निर्देशों के अनुसार अपना करतब दिखाते हैं. मिठाई और चाय ऊंट के दूध से बनाई जाती हैं जोकि एक पारंपरिक भोजन है. इस मेले में ऊंटों की सब से अच्छी नस्ल को भी प्रदर्शित किया जाता है.

डमरू और कौफी

कहानी ● शिवेश श्रीवास्तव

डमरू फेयरी लोमड़ी की कौफी शौप पर काम कर रहा था.
डमरू, जाड़े के मौसम में हमारी शौप पर लोगों की भीड़ लगेगी और हमारी अच्छी कमाई होगी.
हां मालकिन, आखिरकार इस मौसम में हर कोई कुछ न कुछ गरम ही पीना चाहता है.
हां, लेकिन सभी से कौफी के पैसे लेना. कुछ भी मुफ्त नहीं देना है.
आप चिंता न करें. कोई भी मुफ्त में कौफी नहीं पी सकेगा.
डमरू, कौफी कंपनी से आज निरीक्षक आ रहे हैं. तुम यहीं रुको और उन का स्वागत करना. मैं स्नैक्स लेने जा रही हूं.
क्या मैं उन के लिए बढ़िया कौफी बना लूं?
वे हमारी शौप पर कौफी मेकर मशीन लगाएंगे और हमें खर्च भी देंगे. इस से पहले जो मशीन लगाई थी, वह अच्छी थी क्योंकि वह बढ़िया कौफी बनाती थी और तब हम ने बहुत रुपए कमाए.
जी मालकिन.
SONAL
कुछ देर बाद
क्या वे लोग आए थे?
हां, वे अभीअभी चले गए और सौदा नामंजूर कर दिया.
क्यों?
मैं ने उन्हें कौफी परोसी और बिल थमाया. वे तुरंत नाराज हो कर चले गए.
तुम्हें किस ने कहा कि उन्हें बिल पकड़ाओ? वे हमें खर्च देते हैं. उन्हें तो मुफ्त में ही कौफी देना चाहिए थी.
लेकिन मालकिन, आप ने तो कहा था कि हमें सभी से रुपए लेने हैं और किसी को भी मुफ्त में कौफी नहीं देनी है.
लेकिन वे हमारे मेहमान थे और हमें किसी भी पेय के लिए उन से रुपए नहीं लेने चाहिए थे.
तुम ने मुझे बरबाद कर दिया. अब मेरी कौफी शौप बंद हो जाएगी.
यह बात तो आप को मुझे पहले ही बतानी चाहिए थी.

दूर के ढोल सुहावने

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

डिनो गधा और रिंकू चूहा ऐली हाथी की दुकान पर काम करते थे. रिंकू दुकान में ग्राहकों को सामान देने का काम करता था जबकि डिनो बिल दे कर दुकान का हिसाब का ब्योरा संभालता था. लेकिन डिनो और रिंकू दोनों ही अपनेअपने काम से खुश नहीं थे. डिनो और रिंकू एक दिन सुबहसुबह ऐली के घर अपनी शिकायत ले कर पहुंच गए.

''सेठजी, मैं दिन भर ग्राहकों को सामान पैक कर देतेदेते थक जाता हूं. इसलिए मैं चाहता हूं कि अब से मुझे दुकान का हिसाब देखने का काम दिया जाए,'' रिंकू ने कहा.

''अच्छा, तो तुम ग्राहकों को सामान देतेदेते थक जाते हो. अरे, एक दिन दुकान का हिसाब संभाल कर देखो, तब तुम्हें पता चलेगा कि यह कितने माथापच्ची का काम है. सेठजी, मैं खुद भी चाहता हूं कि आप मेरे काम को बदल दें,'' डिनो गुस्से से बोला.

''देखो, तुम दोनों के लिए अच्छा यही रहेगा कि इतने दिनों से जो काम करते आ रहे हो, वही करते रहो. नए काम को करने में तुम्हें परेशानी होगी. दूर के ढोल तो सुहावने होते हैं. सचाई का पता तो पास जा कर ही चलता है,'' ऐली ने उन्हें समझाने का प्रयास किया.

''सेठजी, यह ढोलमंजीरा हमें नहीं पता. हम तो बस इतना चाहते हैं कि आप हमारा काम बदल दीजिए,'' डिनो और रिंकू ने बारबार आग्रह किया तो ऐली आखिर मान गया.

''ठीक है, जब तुम दोनों की इच्छा है और तुम्हें कोई परेशानी नहीं है तो मुझे क्या. अब से डिनो ग्राहकों को सामान दिया करेगा और रिंकू दुकान का हिसाब संभालेगा. यह लो दुकान की चाभी. तुम दोनों चल कर दुकान खोलो, मैं अभी आता हूं,'' ऐली ने कहा.

''धन्यवाद सेठजी,'' डिनो और रिंकू खुश हो कर बोले और दुकान की ओर चल दिए.

दुकान में जाते ही डिनो ने ग्राहकों के लिए सामान पैक करने का काम शुरू कर दिया जबकि रिंकू हिसाब देखने लगा. अभी कुछ ही देर हुई थी कि दुकान पर मोनू बंदर आ गया.

''आज रिंकू कहां गया? रोज तो वही सामान देता था,'' मोनू ने हैरान हो कर पूछा.

''अरे भाई, तुम्हें सामान चाहिए या रिंकू से गप्पें लड़ाना चाहते हो? तुम्हें क्या चाहिए, मुझे बताओ और मैं तुरंत निकाल कर तुम्हें देता हूं,'' डिनो ने तत्परता से कहा.

''मुझे बंदरों वाला एक नहाने का साबुन चाहिए जिसे लगाने से त्वचा कोमल हो जाए,'' मोनू ने कहा.

''अभी लो,'' डिनो बोला और जल्दी से एक साबुन निकाल कर उसे दे दी.

''यह क्या है? मैं ने नहाने का साबुन मांगा था और

तुम कपड़े धोने का साबुन निकाल लाए. तुम क्या मेरी खूबसूरत त्वचा को खराब करना चाहते हो?'' मोनू नाराज हो कर बोला.

''माफ कीजिए, लगता है, जल्दबाजी में गलती हो गई,'' रिंकू बोला और जा कर दूसरा साबुन ले आया.

''अब यह क्या है? यह तो टौयलेट सोप है. लगता है, तुम मेरी त्वचा को खराब करवा कर ही मानोगे. पता नहीं, रिंकू कहां चला गया. अगर वह होता तो ऐसी गड़बड़ नहीं होती,'' मोनू ने गुस्से से कहा और वहां से चला गया.

''हुंह, जरा सा भी सब्र नहीं है. अगर थोड़ी देर रुक जाता तो मैं मोनू को उस की पसंद का साबुन दे देता,'' डिनो गुस्से में बड़बड़ाया.

बिना सामान खरीदे ग्राहक को यों दुकान से जाता देख कर ऐली को बहुत गुस्सा आया, लेकिन डिनो उस का पुराना कर्मचारी था, इसलिए उस ने कुछ नहीं कहा. तब तक दुकान में दूसरे ग्राहक आ गए और डिनो उन्हें सामान देने लगा.

डिनो को न तो यह पता था कि दुकान में कौन सा सामान कहां रखा है और न ही वह यह जानता था कि दुकान में कौन सी चीज है या नहीं है. इस कारण उसे ग्राहकों को सामान देने में देर हो रही थी.

देर होने से बहुत से ग्राहक नाराज हो कर शोर मचाने लगे और डिनो की शिकायत करने लगे कि सामान देने में वह काफी देर लगा रहा है. इस से अब डिनो भी परेशान हो गया.

दूसरी ओर रिंकू का हाल भी यही था. उस का गणित वैसे ही कमजोर था. बड़ी मुश्किल से जोड़तोड़ कर एकएक और्डर का हिसाब लगा रहा था लेकिन बाहर से आती आवाज के कारण वह बारबार हिसाब में गलती कर दे रहा था. इसलिए उसे भी खुद पर गुस्सा आ रहा था.

शाम होतेहोते डिनो और रिंकू दोनों ही अपनेअपने नए काम से परेशान हो गए और उन्हें अपने पुराने काम ही अब अच्छे लगने लगे. इस बात को अब वे समझने लगे थे इसलिए दोनों फिर से अपने काम को बदलवाने की सोचने लगे. लेकिन उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि कैसे एकदूसरे से अपने काम बदलने के बारे में कहें.

रात में दुकान बंद करने के बाद डिनो और रिंकू बाहर एकदूसरे से मिले. ''क्यों न हम दोनों फिर से अपनेअपने काम बदल लें और फिर से वही काम करने लगें जो पहले करते थे,'' डिनो और रिंकू ने एकसाथ कहा और हंसने लगे.

''सच में, हम पहले जो काम करते थे, वही हमारे लिए सही थे,'' डिनो बोला तो रिंकू ने सहमति में अपना सिर हिलाया.

अगले दिन सुबह जब ऐली दुकान पर पहुंचा तो वह मुसकरा उठा. डिनो और रिंकू अपनेअपने पुराने काम को करने में लगे हुए थे, यह देख कर ऐली खुश था. ''मैं ने तुम दोनों से कहा था न कि दूर के ढोल हमेशा सुहावने दिखते हैं. तुम दोनों को एकदूसरे के कार्य सरल लगते थे, लेकिन ऐसा है नहीं,'' ऐली ने कहा.

डिनो और रिंकू ने चुपचाप सहमति में अपने सिर हिला दिए. ●

देखो हंस न देना

टीचर (सुरेश से) : एक कमरे में 20 भेड़ें हैं. अगर 4 भेड़ें कमरे से बाहर चली गईं तो कितनी भेड़ें कमरे में रह गईं?
सुरेश : सर, एक भी भेड़ नहीं रहेगी.
टीचर : क्यों?
सुरेश : चूंकि 4 भेड़ कमरे से बाहर चली गईं, इसलिए उस के पीछेपीछे सभी चली जाएंगी, वे भेड़ हैं न.

अनिरुद्ध बनर्जी, 11 वर्ष
कोलकाता

रिया (रमेश से) : लोग खर्राटे क्यों लेते हैं?
रमेश : क्योंकि उन्हें आवाज निकालना पसंद है.
रिया : नहीं.
रमेश : फिर क्यों?
रिया : क्योंकि वे सो रहे होते हैं.

दीया एस, 14 वर्ष
पलक्कड़

बंटी (संटी से) : जब तुम किसी चीज की तलाश करते हो, तो वह हमेशा अंतिम स्थान पर क्यों मिलती है?
संटी : क्योंकि जब तुम इसे पा लेते हो, तो तुम आगे देखना बंद कर देते हो.

रेमंड डीसा, 11 वर्ष
बैंगलुरु

कोमल (किरण से) : बाईं आंख ने दाईं आंख से क्या कहा?
किरण : हम दोनों के बीच में कुछ है, जो सूंघता है.

रियास सेकेरा, 10 वर्ष
मुंबई

टीचर (छात्र से) : आज का टौपिक है, फोटोसिंथेसिस.
छात्र : ओके सर.
टीचर : फोटोसिंथेसिस क्या है?
छात्र : आज का टौपिक.

हृषिकेश ए, 10 वर्ष
बैंगलुरु

सीमा (अंशु से) : तुम ने फूल को ऊपर क्यों फेंक दिया?
अंशु : क्योंकि मैं फूल को सनफ्लावर होते हुए देखना चाहता हूं.

आशिता कंडारी, 8 वर्ष
गाजियाबाद

सूरज (विमल से) : चुड़ैलों की टीम बेसबौल गेम क्यों हार गई?
विमल : क्योंकि उन के चमगादड़ उड़ गए.

अद्रिशा साहा, 9 वर्ष
दिल्ली

बंटी (बिट्टू से) : चूहे का पसंदीदा खेल क्या है?
बिट्टू : लुकाछिपी.

मिष्टि चोलेरा, 10 वर्ष
राजकोट

एक शिक्षक ने सभी छात्रों को क्रिकेट मैच पर एक निबंध लिखना सिखाया. सभी छात्रों ने लिखना जारी रखा लेकिन कुछ देर बाद मोहित रुक गया.
टीचर : मोहित, तुम रुक क्यों गए?
मोहित : क्योंकि सर, बारिश के कारण मैच रद्द हो गया.

अदिति डी, 9 वर्ष
इंदौर

किशोर (सौरभ से) : ऐसा क्या है जो भूरा है, रोएंदार है और सनग्लासेस पहने हुए है?
सौरभ : छुट्टियां मनाने गया एक नारियल.

अक्षय शेट्टी, 8 वर्ष
हैदराबाद

हाहाहा हाहाहा हीहीहीं हीहीहीं

किट्टू (सीटू से) : मछलियां नमकीन पानी में क्यों रहती हैं?
सीटू : क्योंकि मिर्ची उन्हें छींकने के लिए मजबूर कर देती है.

वाणी जैन, 11 वर्ष, दिल्ली

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:
चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031
ईमल : **writetochampak@delhipress.in**
और **SMS: 9619587613**
ऑनलाइन विजिट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine
https://www.youtube.com/ChampakSciQ

मजेदार विज्ञान

पानी का परीक्षण

पता करें कि जब बर्फ पिघलता है तो पानी का आयतन बढ़ता जाता है.

आप को चाहिए :

- एक गिलास पानी
- आइस क्यूब्स

ऐसा करें :

1. गिलास को पानी से भर दें. धीरे से एक आइसक्यूब उस में डाल दें.

2. जब आइसक्यूब पिघल जाए तो दूसरी आइसक्यूब डाल दें.

देखें :

आइसक्यूब के पिघल जाने के बाद भी पानी गिलास से बाहर नहीं फैलता है.

सोचें :

गिलास से पानी बाहर क्यों नहीं निकला?

जब आप पदार्थ या गैस को गरम करते हैं तो गरम होने से वह फैलता है और ठंडा होने पर वे सिकुड़ता है. लेकिन पानी का गुण इन के विपरीत है. वह ठंडा होने पर फैलता है. पानी के अणुओं के बीच कमजोर बंधन होता है और इस तरह चारों ओर ये स्वतंत्र रूप से बहता है क्योंकि इन के बीच का गैप कमजोर होता है. जब पानी जमना शुरू होता है तो अणु षटभुजाकार में बंधन बनाते हैं. इस से इन के बीच की जगह बढ़ जाती है. जब यह जमता है तो पानी फैलता है. जब आप कोई चीज पानी में डालते हैं जो इस में तैरता हो, तो यह चीज अपने वजन के अनुसार पानी में जगह घेर लेती है. हमारे इस प्रयोग में आइस ने अपने वजन के अनुसार पानी में जगह ले ली और जब आइस पिघलती है तो पानी के अणुओं के बीच का बंधन कमजोर हो गया और वे नजदीक आ गए. यहां पर सिर्फ आयतन कम हुआ, लेकिन द्रव्यमान समान ही बना रहता है. इसी वजह से पानी आइस के पिघलने के बाद भी गिलास से बाहर नहीं गिरता है.

पता करें :

सर्दियों में पानी के पाइप क्यों फट जाते हैं?

ठंडे प्रदेशों में पाइप के अंदर पानी जम जाता है और फैलना शुरू हो जाता है. क्योंकि पानी को पाइप के अंदर भागने की जगह नहीं मिलती है इसलिए पाइप की दीवारों पर अंदर की तरफ दाब बढ़ जाता है. इस कारण पाइप फट जाते है. इसे रोकने के लिए ठंडे प्रदेशों में थोड़ा सा पानी पाइप में रातभर बहते रहने के लिए छोड़ दिया जाता है क्योंकि बहने वाला पानी नहीं जमता है और इस तरह से पाइप को फटने से बचाया जाता है.

बताओ तो जानें

1. मेरी आंखें हैं तीन
   अलगअलग रंगों की
   लाल आंख है जब खुलती
   सब कुछ है जम जाता.

2. चौकी पर बैठी एक रानी
   सिर पर आग बदन में पानी
   रोरो कर भी यह
   अंधेरा दूर भगाती.

3. पैर नहीं है पर
   हरदम चलती रहती
   दोनों हाथों से मुंह पोंछ
   दीवार पर टंगी रहती.

4. काला रंग है मेरी शान
   सब को देता मैं हूं ज्ञान
   शिक्षक करते मुझ पर काम
   नाम बताओ बनो महान.

देखें तुम कितना जानते हो

1. बौलपौइंट पेन का आविष्कार किस ने किया था?
   (क) बिरो ब्रदर्स
   (ख) वाटरमैन बदर्स
   (ग) बिक ब्रदर्स
   (घ) राइट ब्रदर्स

2. इन में से किस का 'ओएस' कंप्यूटर का संक्षिप्त नाम है?
   (क) और्डर औफ सिग्नीफिकैंस
   (ख) ओपन औफ सौफ्टवेयर
   (ग) औपरेटिंग सिस्टम
   (घ) औप्टिकल सेंसर

3. साधारण नमक सोडियम क्लोराइड है तो बेकिंग सोडा क्या है?
   (क) पोटैशियम क्लोराइड
   (ख) पोटैशियम कारबोनेट
   (ग) पोटैशियम हाइड्रौक्साइड
   (घ) सोडियम बायकार्बोनेट

4. पौधे अपना पोषक पदार्थ मुख्यरूप से किस से प्राप्त करते हैं?
   (क) क्लोरोफिल से
   (ख) मिट्टी से
   (ग) प्रकाश से
   (घ) वातावरण से

उत्तर (बताओ तो जानें) : 1– लालबत्ती, 2–भिश्ती , 3–घड़ी, 4–ब्लैकबोर्ड.
उत्तर (देखें कितना जानते हो?) : 1–क, 2–ग , 3–घ, 4–ख.

लाल रिबन का रहस्य

कहानी ● डा. के. रानी

दिसंबर महीने की पहली तारीख थी. रुचिन सुबह के समय स्कूल जा रहा था. उस ने देखा कि स्कूल के बहुत सारे छात्रछात्राएं मुख्य सड़क पर लाइन बना कर जा रहे थे. वे जोरजोर से एक नारा लगा रहे थे, 'एड्स का ज्ञान बचाए जान.' उन के हाथों में तख्तियां थीं, उन पर अलगअलग स्लोगन लिखे हुए थे.

उन के साथ दो टीचर भी थे जो उन्हें रास्ते में एक ओर चलने के लिए बारबार निर्देश दे रहे थे. बच्चों ने ब्लेचर का कोट पहन रखा था जिस की जेब पर एक लाल रंग का मुड़ा हुआ छोटा सा रिबन लगा हुआ था. इस लाल रंग के रिबन ने रुचिन का ध्यान पहली बार खींचा था और वह समझ गया था कि मोड़ कर बनाया गया निशान जरूर एड्स से संबंधित है.

स्कूल पहुंचने के बाद भी रुचिन इसी बारे में सोच रहा था. उसे समझ में नहीं आ रहा था कि एड्स का मतलब क्या होता है और ये स्कूली बच्चे सड़कों पर हाथ में तख्ती ले कर लोगों को क्यों जागरूक कर रहे हैं?

विज्ञान का पीरियड था. रुचिन से रहा नहीं गया. उस ने अपनी टीचर से पूछा, ''मैम, एड्स क्या होता है?''

कक्षा तीन के बच्चे के मुंह से इस सवाल को सुन कर टीचर मिस मिशेल चौंक गईं. अचानक उन्हें याद आया कि आज तो विश्व एड्स दिवस है जिसे हर वर्ष पहली दिसंबर को मनाया जाता है. उन्हें विश्वास हो गया कि रुचिन ने जरूर कहीं पर कुछ देखा होगा जिस से उस की उत्सुकता बढ़ गई होगी. इसीलिए वह ऐसा प्रश्न पूछ रहा है.

''ऐसी क्या बात है रुचिन ने जरूर कहीं पर कुछ

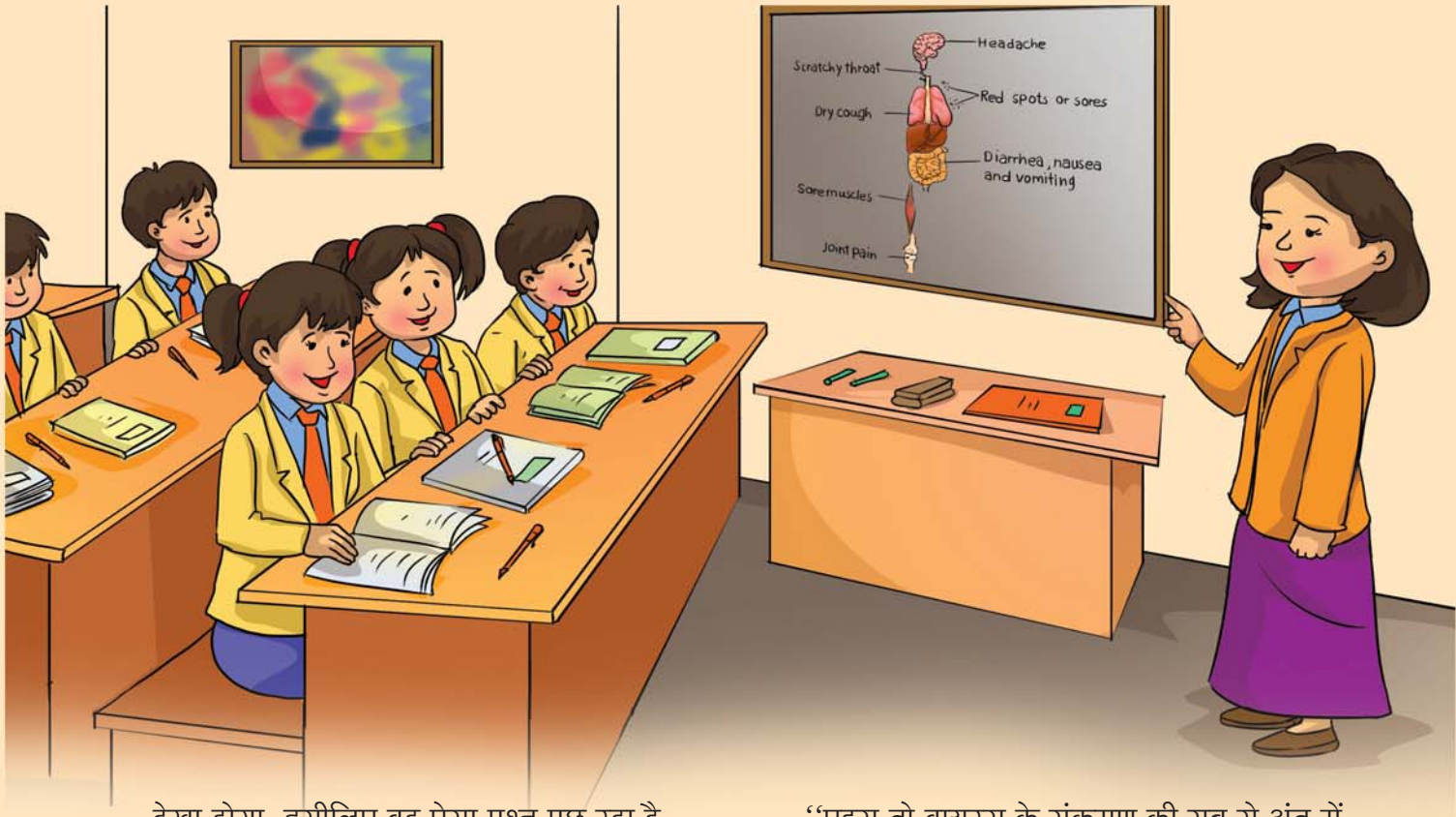

देखा होगा, इसीलिए वह ऐसा प्रश्न पूछ रहा है.

''ऐसी क्या बात है रुचिन, जिस ने तुम्हें एड्स के बारे में बात करने के लिए प्रेरित किया?'' मिस मिशेल ने पूछा.

''मैम, मैं ने स्कूल आते समय सड़क पर कुछ स्कूली बच्चों को हाथों में तख्तियां ले कर जाते हुए देखा. वे नारे भी लगा रहे थे. इसी से मेरी उत्सुकता जगी,'' रुचिन ने कहा.

मैडम मिशेल सब बात समझ गईं. उन्होंने अपना सिर हिलाते हुए कहा, ''रुचिन, तुम ने एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछा है. आज विश्व एड्स दिवस है. आज मैं तुम्हें एड्स के बारे में जानकारी दूंगी. एड्स का पूरा नाम इम्युनिटी डेफिसिएंसी सिंड्रोम है. यह एक लाइलाज बीमारी है जो, ह्सूमन इम्युनो वायरस के कारण होती है. इस के संक्रमण से बुखार, गले में दर्द, थकान, पसीना आना और मांसपेशियों में दर्द होता है.''

''तब तो यह बीमारी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में बहुत तेजी से फैल जाती होगी,'' अक्षत ने चिंतित हो कर पूछा.

''एड्स तो वायरस के संक्रमण की सब से अंत में होने वाली अवस्था है. एक स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में इस वायरस के प्रवेश करते ही व्यक्ति को एड्स नहीं हो जाता. इस वायरस से संक्रमित व्यक्ति एचआईवी पौजिटिव कहलाता है. ऐसे बहुत से मामले देखने में आए हैं, जब संक्रमित व्यक्ति बिना किसी लक्षण के कई सालों तक अपना जीवनयापन आराम से करते रहे हैं,'' मैडम मिशेल ने कहा.

''मैम, ऐसा लगता है, यह एक बहुत खतरनाक वायरस है,'' नव्या ने पूछा.

''हां, एड्स के कारण शरीर की अन्य रोगों से लड़ने की क्षमता कम हो जाती है. ऐसे में अगर कोई व्यक्ति एचआईवी से संक्रमित है और उसे कोई अन्य बीमारी लग जाती है तो उस का शरीर बीमारी से लड़ नहीं पाता और अंत में यही बीमारी उस के लिए जानलेवा साबित होती है,'' मैडम ने कहा.

''मैम, एड्स कैसे फैलता है?'' रुचिन ने पूछा.

उस के इस प्रश्न पर मिस मिशेल पहले थोड़ा सकुचाईं. उन्हें समझ नहीं आया कि इन छोटे बच्चों को अपनी बात कैसे समझाए? वह बोलीं, ''यह

वायरस एक संक्रमित व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को हो जाता है. ऐसा तब होता है जब कोई स्वस्थ व्यक्ति संक्रमित व्यक्ति के शरीर से निकलने वाले तरल पदार्थ जैसे कि रक्त या संक्रमित मां के दूध के संपर्क में आता है.''

''तब तो हमें संक्रमित व्यक्ति से बच कर रहना चाहिए और उस के पास नहीं जाना चाहिए,'' सिंपी बोली.

''नहीं बच्चो, यह बीमारी संक्रमित व्यक्ति को छूने से नहीं फैलती,'' मैम ने कहा.

''मैम, हमारे शरीर से तो आंसू, लार, पसीना और यूरिन भी तो निकलता है. तो क्या इन से भी यह बीमारी फैल सकती है?''

''नहीं, यह बीमारी इन सब से नहीं फैलती है. लेकिन कई बार संक्रमित व्यक्ति की सूई लगाने और खून चढ़ाने से भी स्वस्थ व्यक्ति एचआईवी पौजिटिव हो जाता है,'' मैम ने कहा.

''लेकिन मैम, सूई से तो लोग अपने शरीर पर टैटू भी बनवाते हैं, तो क्या इस से भी बीमारी फैल सकती है?'' सिंपी ने पूछा.

''तुम्हारा प्रश्न सही है. टैटू बनवाने की सूई से भी यह बीमारी संक्रमित व्यक्ति से स्वस्थ व्यक्ति को हो जाती है,'' मैम ने कहा.

''तब तो हमें अपने शरीर पर टैटू नहीं बनवाने चाहिए,'' नव्या ने निराश हो कर पूछा.

''बच्चो, हमें इस तरह के किसी भी काम को करने में सावधानी बरतनी चाहिए. एक सूई जिस का इस्तेमाल टैटू बनाने के लिए एक बार हुआ हो उसी सूई का दोबारा इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि उस के दोबारा इस्तेमाल से संक्रमण होने का खतरा बढ़ जाता है,'' मैम ने कहा.

''इस का मतलब हमें एड्स पीड़ित व्यक्ति से बात नहीं करनी चाहिए और उस से दूर रहना चाहिए,'' अक्षत बोला.

''नहीं, ऐसा नहीं सोचना चाहिए. दुनियाभर में बहुत से लोग हैं जो इन की मदद के लिए प्रयासरत हैं. यह बीमारी छूने से, गले लगने से या संक्रमित व्यक्ति के साथ उठनेबैठने और बोलने से नहीं फैलती है. हम सब का फर्ज बनता है कि हम ऐसे लोगों के प्रति सहानुभूति रखें न कि इन का बहिष्कार करें,'' मैम मिशेल ने कहा.

''मैम, क्या एड्स होने के बाद संक्रमित व्यक्ति मर जाता है?'' रुचिन ने पूछा.

''आजकल कई ऐसी दवाओं की खोज की जा चुकी है जिन से शरीर की बीमारी से लड़ने की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है. इन दवाओं ने संक्रमित व्यक्ति को कई सालों तक जिंदा रहने में सहायता की है. ऐसे बहुत से लोग हैं,'' मैम ने विस्तार से बताया.

''मैम, क्या यह बीमारी बच्चों में ज्यादा होती है?'' रुचिन ने पूछा तो मैम मुसकरा दीं.

वह बोलीं, ''यह बीमारी किसी की उम्र देख कर नहीं आती. कई बार बच्चे भी इस बीमारी से संक्रमित हो जाते हैं. खास कर तब जब वे किसी संक्रमित मां से पैदा होते हैं और दूध पीते हैं. संक्रमित व्यक्ति का खून जब स्वस्थ बच्चे को चढ़ाया जाता है तो वह भी संक्रमित हो जाता है. इस बीमारी से एक व्यक्ति किसी भी उम्र में संक्रमित हो सकता है. हालांकि बच्चों में इस के संक्रमण की संभावना युवाओं से कम होती है यानी युवा इस से ज्यादा प्रभावित होते हैं.''

''मैम, आज रैली में शामिल सभी बच्चों ने अपने कोट की जेब पर लाल रंग का मुड़ा हुआ रिबन भी लगा रखा था. वह किस लिए था, मैम?'' रुचिन ने पूछा. लाल रिबन के प्रति उस की उत्सुकता अभी भी बनी हुई थी.

''तुम ने सही पहचाना, रुचिन. एड्स के लिए जिम्मेदार ह्यूमन इम्युनो डेफिसिएंसी वायरस की पहचान सब से पहले वर्ष 1981 में की गई थी. उस के बाद वर्ष 2007 में अमेरिका के व्हाइट हाउस द्वारा एड्स दिवस पर इस रोग के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए प्रतीक के रूप में इस लाल रिबन की शुरुआत की गई. अब लाल रिबन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एड्स के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए मान्यता प्राप्त निशान बन गया. इस लाल रिबन को एचआईवी पीड़ित लोगों के समर्थन में पहना जाता है. इसे देख कर यह पता चलता है कि एड्स के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाई जा रही है,'' मिस मिशेल ने कहा.

''मैम, क्या मच्छरों के काटने से भी यह बीमारी फैलती है?'' केविन ने पूछा.

''नहीं केविन, मच्छरों के काटने से या संक्रमित व्यक्ति ने जिस गिलास में पानी पीया हो, उसी गिलास में पानी पीने से यह बीमारी नहीं फैलती. तुम सभी अभी बच्चे हो. तुम जब बड़े जो जाओगे तो तुम्हें इस बीमारी के बारे में और अधिक जानकारी दी जाएगी. बस अभी सिर्फ इतना ही जान लो कि इस से बचने का एक ही सब से सरल उपाय है,'' मैम ने कहा.

''वह क्या है, मैम?'' सभी बच्चों ने एक स्वर में पूछा.

''बचाव में ही बचाव है,'' मैम बोलीं. तभी पीरियड खत्म होने की घंटी बजी और मैम कक्षा से बाहर चली गईं. अब तक रुचिन की जिज्ञासा भी काफी हद तक शांत हो गई थी. यह उस की जिज्ञासा ही थी जिस की वजह से एड्स के बारे में इतनी महत्त्वपूर्ण जानकारी पूरी कक्षा को मिल पाती थी. ●

याददाश्त बढ़ाएं

भारत में 4 दिसंबर को राष्ट्रीय नौसेना दिवस मनाया जाता है. चित्र को देखिए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए.

प्र.1- आप कितने झंडों की गिनती कर सकते हैं?
प्र.2- किस तरह के शिप यानी जहाज आप देखते हैं?
प्र.3- भारतीय नौसेना का यूनीफौर्म का रंग कैसा है?
प्र.4- क्या आप एक पनडुब्बी को यहां देख पा रहे हैं?

चीकू

चित्रकथा : दास

जंबो का जन्मदिन मनाने के बाद चीकू और मीकू घर लौट रहे थे.

बैडी भागा और नदी किनारे नीले रंग के एक टब में फिसल कर गिर गया.

ओह, यह क्या हो गया. मुझे जल्दी से भाग लेना चाहिए.

बैडी फिर भागने लगा और एक बंद गली में पहुंच गया.

अब मैं कहां जाऊं?

चीकू और मीकू ने एक नीले जानवर को देखा और रुक गए.

अरे, एक नीले जानवर को देखो.

वह कोई नीला जानवर नहीं है.

यह जरूर एलियन होगा. मैं ने मूवीज में जिन एलियनों को देखा है, वे नीले होते हैं. हमें भाग लेना चाहिए. हम इन का सामना नहीं कर सकते हैं.

वे भागने लगे और इस बार मीकू नीले रंग के टब में गिर गया.

आह, ये मैं किस चीज में गिर गया?

तुम नीले रंग के टब में गिर गए हो. अब तुम भी एलियन बन गए हो. हा...हा...हा...

हुंह, इस का मतलब यह हुआ कि हम ने एलियन को नहीं देखा था.

हां, चलो, घर चलें. तुम्हें नहाना होगा नहीं तो दूसरे तुम्हें देख कर एलियन समझेंगे और भागने लगेंगे.

बैडी भी घर गया.

मेरे घर में एक भूत आ गया.

मैं तुम्हारा भाई हूं.

बिन्नी लोमड़ी उस के पीछे झाड़ू ले कर दौड़ी.

नीला भूत मेरा भाई नहीं हो सकता. भाग जाओ यहां से.

आज मेरे साथ ये क्या हो गया? मैं एक शिकार भी नहीं पकड़ सका और अब मुझे मेरी बहन ने ही भगा दिया.

बच्चों के मानवाधिकार

कहानी ● ललित शौर्य

अमन बीते कई दिनों से उदास था. उस का पार्क में जा कर खेलने का भी मन नहीं करता था. वह शाम के समय पार्क की एक बेंच पर चुपचाप बैठा रहता और चारों ओर देखता रहता. ऐसा लगता था जैसे उसे किसी का इंतजार हो जिस ने उस से लौट कर आने का वादा किया हो.

''क्या बात है, अमन? आजकल तुम हमारे साथ खेलते नहीं हो और यहां इस बेंच पर चुपचाप अकेले बैठे रहते हो. क्या कोई बात तुम्हें परेशान कर रही है?'' उस के दोस्त अखिल ने उस से पूछा.

''नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है. जाओ, तुम खेलो. मुझे यहां बैठे रहना ही अच्छा लगता है,'' अनमने मन से अमन ने कहा.

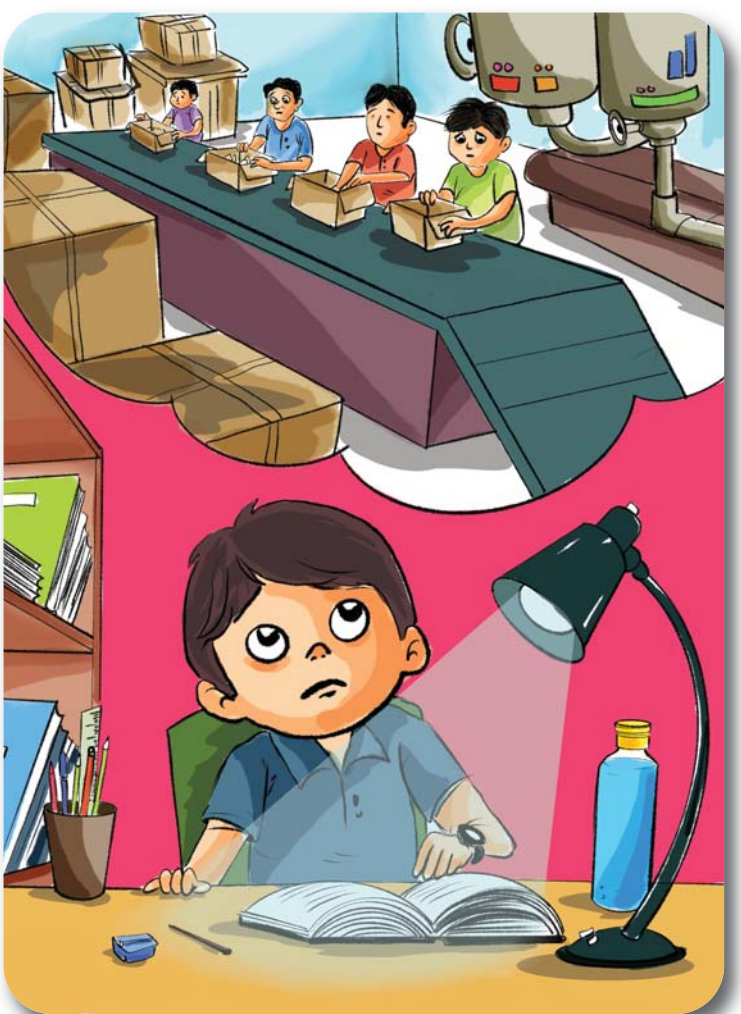

''अकेला बैठना तुम्हें कब से अच्छा लगने लगा? सप्ताह भर पहले तक तो तुम्हारे पैर एक जगह टिकते नहीं थे. तुम एक जगह पर काफी देर तक कभी बैठते नहीं थे. हमेशा खेलते रहना चाहते थे और दौड़ते रहते थे. अब अचानक तुम्हारे साथ क्या हो गया अमन?'' अखिल ने पूछा.

''बस, यों ही, मुझे अच्छा लगता है,'' अमन ने जवाब दिया. उस का मन ज्यादा बातचीत करने का नहीं कर रहा था.

''मैं जानता हूं, तुम उदास क्यों हो,'' अखिल ने कहा.

''क्या, तुम जानते हो?'' अमन ने पूछा.

''तुम अमित के कारण उदास हो, वह इन दिनों पार्क में हमारे साथ खेलने नहीं आ रहा है,'' अखिल ने जवाब दिया.

''हां, तुम सही कह रहे हो. अमित के बिना खेलने में मुझे अच्छा नहीं लगता है. मुझे नहीं पता अमित कहां है. वह बहुत दिनों से गायब है,'' अमन ने कहा.

''मुझे पता है, वह कहां है. मैं उस से कुछ दिनों पहले मिला था और उस ने मुझे बताया था कि उस ने अब एक फैक्टरी में काम करना शुरू किया है. वह वहां अच्छे रुपए कमा रहा है,'' अखिल ने कहा.

''उस ने काम करना शुरू कर दिया है? लेकिन वह तो अभी बच्चा है. उसे इतनी जल्दी काम करने नहीं जाना चाहिए था. रुपए तो वह बड़ा हो कर भी कमा सकता है,'' अमन ने कहा.

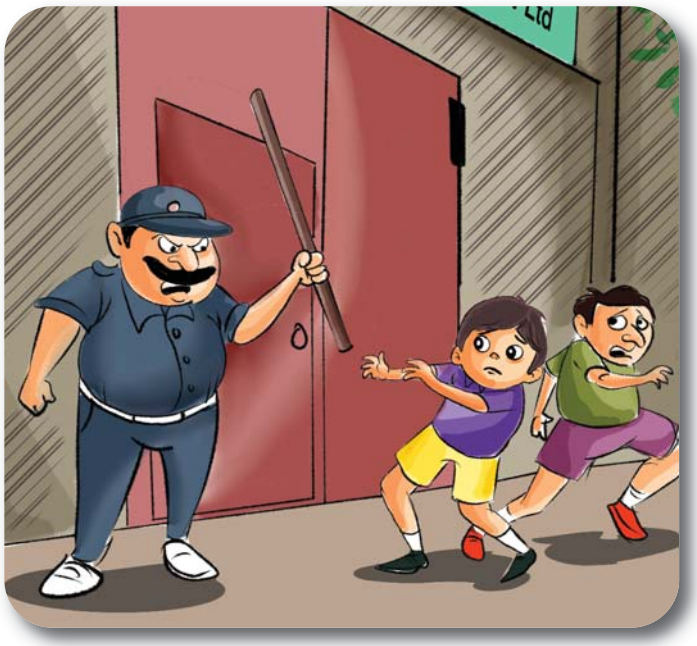

''अमित गरीब घर का लड़का है. शायद इसीलिए उसे काम करने जाना पड़ा होगा,'' अखिल ने विस्तार से बताया.

अखिल ने इस के बाद अमन का हाथ पकड़ा और खींच कर मैदान में खेलने ले गया. उन के अन्य साथी भी आ गए और सभी ने खेलना शुरू कर दिया. एक सप्ताह बाद आज अमन खेल रहा था.

चूंकि अंधेरा हो गया था, अमन और उस के सभी दोस्त अपनेअपने घर जाने लगे. लेकिन अमन अभी भी अमित के बारे में सोच रहा था.

घर पहुंच कर अमन अपनी पढ़ाई करने बैठ गया. लेकिन वह पढ़ाई में अपना ध्यान नहीं लगा पा रहा था और अमित के बारे में सोच रहा था. वह अमित से मिलना चाहता था और उस से बात कर यह जानना चाहता था कि ऐसी क्या मजबूरी आ गई थी कि उसे इस छोटी सी आयु में काम करने फैक्टरी में जाना पड़ रहा था.

अगले दिन सुबह वह अखिल के पास गया और कहा, ''मुझे उस फैक्टरी में ले चलो जहां अमित काम करता है.''

''ठीक है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि हमें फैक्टरी के अंदर जाने दिया जाएगा,'' अखिल ने कहा.

''हम एक बार चल कर देखते हैं, आगे क्या होता है, देख लेंगे,'' अमन ने कहा.

''ओके, चलो, चलते हैं,'' अखिल ने कहा और वे फैक्टरी की ओर जाने लगे.

लगभग एक किलोमीटर चलने के बाद वे दोनों फैक्टरी के गेट पर पहुंचे. गेट पर एक गार्ड तैनात था. उस ने उन से कड़कती आवाज में पूछा, ''अरे बच्चो, तुम दोनों कहां जा रहे हो?''

''हम अपने दोस्त अमित से मिलने आए हैं. वह यहीं काम करता है,'' अमन ने कहा.

''यहां कोई भी बच्चा काम नहीं करता है,'' गार्ड ने सख्ती से कहा और उन्हें डंडा दिखा कर भगा दिया.

''अब हम क्या करें? हम अमित से कैसे मिलेंगे?'' अखिल ने पूछा.

''अमित से तो हम हर हाल में मिलेंगे,'' अमन ने दृढ़ता के साथ कहा.

उस के बाद दोनों फैक्टरी के पीछे वाले हिस्से में चले गए. वहां पर कोई भी नहीं था और कोई गेट भी नहीं था. लेकिन वहां दीवार पर एक छोटी सी खिड़की थी.

‘‘चलो, उस खिड़की से अंदर देखते हैं कि वहां क्या चल रहा है,’’ अमन ने कहा.

‘‘ना बाबा ना, अगर वह गार्ड इधर आ गया तो हमारा क्या होगा?’’ अखिल ने डरते हुए कहा.

‘‘कुछ भी नहीं होगा. तुम मेरे साथ आओ,’’ अमन अखिल का हाथ पकड़ कर खींचते हुए खिड़की की ओर ले जाते हुए बोला.

वे दोनों खिड़की से भीतर झांक कर देखने लगे. अंदर बहुत सारे बच्चे काम कर रहे थे. उन्हीं में अमित को भी उन्होंने काम करते हुए देखा. अमन अमित का ध्यान खींचने के लिए इशारे करने लगा, लेकिन अमित ने खिड़की की ओर नहीं देखा. आखिर में काफी कोशिश के बाद अमित का ध्यान खिड़की की ओर गया और अमन को वहां देख का अमित बहुत खुश हुआ.

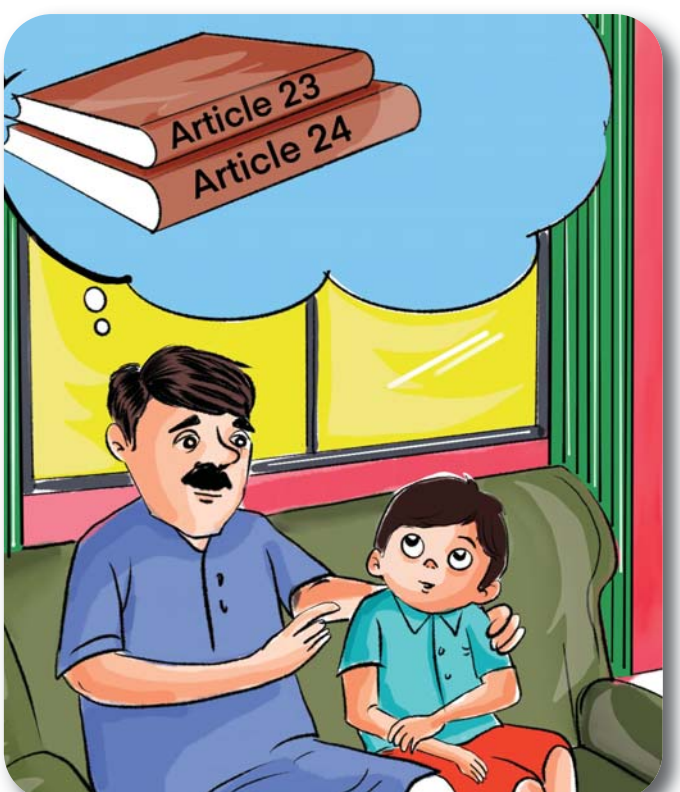

अमित सब की नजर बचा कर चुपके से खिड़की के पास आया और फुसफुसा कर बोला, ‘‘तुम यहां कैसे आ गए? अगर किसी ने देख लिया तो हमें बहुत मार पड़ेगी.’’

‘‘हमें कुछ भी नहीं होगा. हमें बताओ, तुम यहां काम क्यों कर रहे हो?’’ अमन ने पूछा.

‘‘मैं बहुत मजबूर हूं. मुझे रुपयों की जरूरत थी इसलिए पहले मैं ने अपनी मरजी से काम करना शुरू किया था. लेकिन अब फैक्टरी का मालिक मुझ से जबरदस्ती काम करवाता है. इन बच्चों से भी जबरदस्ती काम करवाया जा रहा है. मालिक बहुत गंदा आदमी है अगर हम काम करने से मना करते हैं तो वह सब की पिटाई करता है,’’ अमित ने दुखी हो कर कहा.

‘‘अच्छा, तो यह बात है. तुम चिंता मत करो. हम इस मामले में कुछ करेंगे,’’ अमन ने दृढ़ता से कहा.

वे अभी भी बातें करने में लगे हुए थे. तभी फैक्टरी के गार्ड ने उन्हें देख लिया. वह उन्हें पकड़ने के लिए दौड़ा. लेकिन दोनों तेजी से भागे और गार्ड के हाथों आने से बच निकले.

‘‘बहुत मुश्किल से हम बच गए. अब मैं यहां दोबारा फिर कभी नहीं आऊंगा,’’ माथे पर आए पसीने को पोंछते हुए अखिल ने कहा.

‘‘अमित को यहां से बाहर निकालने के लिए हमें यहां आना पड़ेगा. वह हमारा दोस्त है और हम उसे यों ही अकेला नहीं छोड़ सकते,’’ अमन ने कहा.

अखिल ने इस पर कुछ भी नहीं कहा. दोनों अपनेअपने घर की ओर चल दिए.

अमन अमित को बचाने की तरकीब सोचने लगा और इस बारे में उस ने अपने पापा से बात करने का निर्णय किया. उस को पूरा भरोसा था कि पापा उस की मदद करेंगे.

रात में पापा जब औफिस से घर आए, उस ने उन्हें अमित की पूरी कहानी बताई.

पापा पूरी बात सुन कर हैरान रह गए. उन्होंने कहा, ‘‘यह तो एक अपराध है और बच्चों के मानवाधिकार के खिलाफ है. कोई भी व्यक्ति बच्चों से जबरन बालश्रम नहीं करवा सकता. हमारे संविधान के अनुच्छेद यानी आर्टिकल 23 के अनुसार बच्चों को अधिकार प्राप्त है कि उन्हें बंधुआ मजदूरी के लिए जबरदस्ती मजबूर नहीं किया जा सकता है. वहीं अनुच्छेद 24 के अनुसार 14 साल से कम उम्र के किसी भी बच्चे को किसी भी फैक्टरी या खदान में काम करने के लिए नहीं रखा जा सकता है. इस का मतलब यह हुआ कि वहां अमित से जबरदस्ती काम करा कर फैक्टरी मालिक अपराध कर रहा है, जो कानून के अनुसार दंडनीय है. हम लोग कल वहां जाएंगे और वहां से बच्चों को मुक्त कराएंगे.’’

‘‘मुझे पता नहीं था कि बच्चों को भी अधिकार प्राप्त हैं,’’ अमन ने हैरानी से कहा.

‘‘हां बेटा, सभी बच्चों और वयस्कों को मानवाधिकार प्राप्त है और हमें इस के लिए जागरूक होने की जरूरत है,’’ पापा ने कहा.

अमन बच्चों के अधिकार के बारे में जान कर बहुत खुश हुआ और वह सोने चला गया.

अगले दिन सुबह पापा ने अपने औफिस से छुट्टी ले ली और स्थानीय पुलिस को फोन कर सभी बातों की जानकारी दी. जल्दी ही पुलिस अमन के घर आ गई और तुरंत अमन के पापा और चार पुलिस कौंस्टेबल फैक्टरी में छापा मारने के लिए चल दिए.

वे जैसे ही फैक्टरी के गेट पर पहुंचे, गार्ड वहां से भाग गया. वे सभी फैक्टरी के अंदर गए और वहां उन्होंने बहुत से बच्चों को काम करते हुए देखा. अमित भी उन्हीं के बीच काम कर रहा था. पुलिस ने

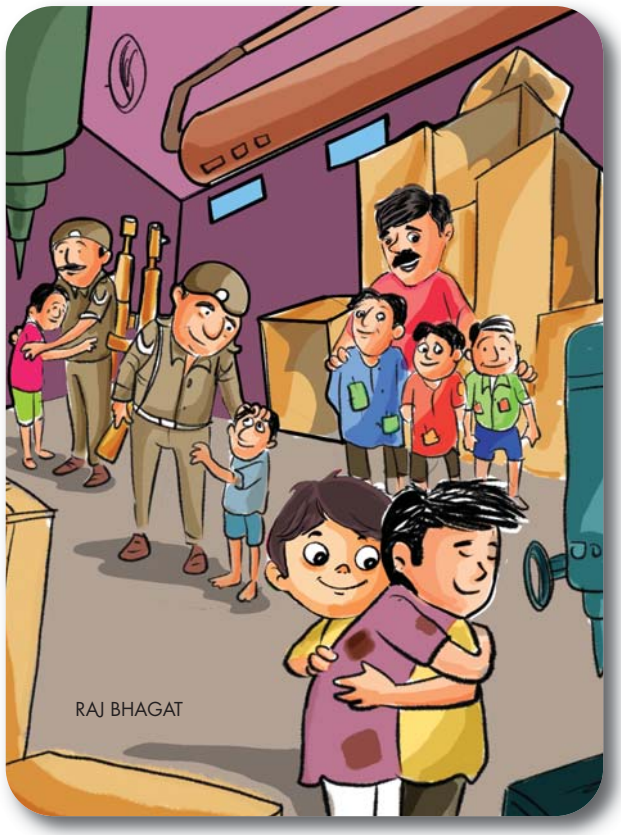

बच्चों को मुक्त कर दिया और मालिक को गिरफ्तार कर लिया.

‘‘बच्चो, आज से आप लोगों को ऐसे लोगों के जाल में नहीं फंसना है. हमेशा सतर्क रहना है और ऐसे लोगों से बचना है. आप को अपने बाल अधिकारों के बारे में जागरूक बने रहना है. आप की उम्र खेलनेकूदने की है, फैक्टरियों में काम करने की नहीं है. अब आप सभी अपनेअपने घर जा सकते हैं,’’ अमन के पापा ने कहा.

सभी बच्चे अपने घरों की ओर चल दिए. अमित ने अमन को गले लगा लिया और धन्यवाद कहा. खुशी के आंसू उस की आंखों में भर आए थे. वह कृतज्ञता के भाव से भर गया.

‘‘कल पार्क में आना, मुझे तुम्हारे बिना पार्क अच्छा नहीं लगता है,’’ उस के आंसु पोंछते हुए अमन ने कहा.

अमित ने सहमति में अपना सिर हिलाया और मुसकराया. उस के बाद सब अपनेअपने घर चले गए. ●

बिंदु मिलाओ

अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं और चित्र पूरा करें.

जब दोनों टीमें जीत गईं

कहानी ● श्याम नारायण श्रीवास्तव

दिसंबर का यह प्रथम सप्ताह था. बाहर बहुत ठंड़ थी, लेकिन राहुल को इस की परवा नहीं थी. उस पर क्रिकेट मैच की धुन सवार थी जो आने वाले संडे को होने जा रहा था, जिसे ले कर शिवम की टीम ने राहुल को चैलेंज किया था.

''इतने ज्यादा खुश होने की जरूरत नहीं है. अगले संडे को तुम 50 रन भी नहीं बना पाओगे,'' मैच हारने के बाद शिवम ने कहा था.

''अगले संडे को विवेक भी हमारी टीम से खेलेगा. तुम जानते हो न, वह कितना अच्छा बौलर है. क्या गजब की बौलिंग करता है. हम देखेंगे कि तुम्हारे बल्लेबाज कैसे रन बनाते हैं,'' शिवम के समर्थन में उस के साथी अंकुर ने कहा.

''ठीक है, संडे तो आने दो. हम विवेक और उस की बौलिंग को भी देख लेंगे,'' राहुल ने कहा.

आज शिवम की टीम 22 रन से हार गई थी, क्योंकि राहुल ने 20 ओवर में 170 रन बनाने का बड़ा टारगेट शिवम की टीम को दिया था. उस की टीम का सब से अच्छे बल्लेबाज सौरभ ने कई चौके, छक्के लगा कर काफी रन बनाए थे.

टौस तो शिवन ने ही जीता था, लेकिन उस ने पहले फील्डिंग चुनी थी. उस ने सोचा कि जो भी टारगेट मिलेगा वह उसे पूरा कर लेगा. लेकिन राहुल की बौलिंग की सामने उस के किसी भी बल्लेबाज की नहीं चली. सभी एकएक कर के आउट हो गए.

संडे के दिन सुबह ही राहुल ने अपनी क्रिकेट किट पैक कर ली थी और 8 बजते ही उस ने खेल का सामान उठाया और मैदान की ओर चल पड़ा. उस की टीम के अन्य साथी रास्ते में उस के साथ हो लिए थे. मैच 9 बजे शुरू होने वाला था. समय पर सौरभ भी टीम के साथ आ गया था.

सौरभ को देखते ही राहुल ने कहा, ''आओ, सौरभ, आज हमें तुम्हारी बैटिंग का कमाल देखना है. शिवम कह रहा था कि उस का कोई साथी है, विवेक. वह गजब की बौलिंग करता है.''

''अरे यार, मैं विवेक को जानता हूं. वह मेरे साथ मांटेसरी में पढ़ता था. इस मैच में हमें तो उस की धज्जी उड़ानी है. तुम सब देखना, उस की तो हर बौल पिटेगी,'' राहुल के दोस्त आलम ने बैट घुमाते हुए आत्मविश्वास से कहा.

हर कोई मैदान में पहुंच चुका था और दोनों टीमें खेलने के लिए तैयार खड़ी थीं. लेकिन एक समस्या आ गई थी. मैदान में एक ओर से भयंकर दुर्गंध आ रही थी.

''ऐसा लगता है, उधर कोई जानवर मरा है. यहां तो

खेलना मुश्किल है,'' ललित ने कहा.

दुर्गंध के कारण किसी को भी खेलने की इच्छा नहीं हो रही थी. राहुल, सौरभ और शिवम ने अपने मुंह और नाक पर रूमाल लगाया और जिधर से दुर्गंध आ रही थी उधर देखने चल दिए कि आखिर वहां हुआ क्या था. अन्य लड़के भी उन के पीछेपीछे चल दिए. वहां जा कर उन्होंने देखा, कुत्ता मरा पड़ा था.

''अब हम क्या करेंगे, आज का मैच तो बेकार हो गया,'' तुषार ने चिंता जताई.

''वहां मेरे स्कूल के पास एक बढ़िया मैदान है. चलो, वहीं चल कर खेलते हैं,'' आलम ने सुझाव दिया.

''नहीं, आज का मैच नहीं होगा. यह हम सब की जिम्मेदारी बनती है कि इस दुर्गंध को यहां से किसी तरह दूर किया जाए. जरा सोचो, हम लोग तो यहां से चले जाएंगे, क्योंकि हम दुर्गंध सह नहीं पाएंगे. लेकिन ये गरीब बस्ती वाले लोग जो बेचारे यहां रह रहे हैं, इस दुर्गंध को कैसे झेलेंगे,'' राहुल ने कहा.

कई लड़कों ने राहुल की इस बात का समर्थन किया.

''लेकिन हम कैसे इसे दूर करेंगे?'' तुषार ने पूछा.

''मैं बताता हूं,'' विवेक ने आगे बढ़ कर कहा, ''मेरे पापा नगरपालिका में अधिकारी हैं. मैं पापा को फोन कर के सब बताऊंगा.''

उस के बाद विवेक ने अपने पापा को फोन किया और सारी जानकारी से उन्हें अवगत कराया.

''अभी एक घंटे में सारी व्यवस्था ठीक कर दी जाएगी,'' उधर से पापा ने फोन पर कहा.

यह सुन कर सब बड़े खुश हुए. थोड़ी ही देर में नगरपालिका की एक छोटी सी गाड़ी, कचरा उठाने वाली जेसीबी मशीन और कुछ कर्मचारी मैदान में

आ गए. नगरपालिका की गाड़ी को देख कर आसपास रहने वाले लोग भी वहां इकट्ठा होने लगे.

नगरपालिका के कर्मचारियों ने जेसीबी मशीन की सहायता से मरे हुए कुत्ते को उठा कर कचरे की गाड़ी में डाला. उस के बाद मैदान से कुछ मिट्टी उठा कर मरे कुत्ते के ऊपर डाला ताकि उसे ले जाते समय रास्ते में दुर्गंध न फैले. उस के बाद मैदान पर उन्होंने कुछ ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव किया और चले गए. अब वहां पूरे मैदान में किसी भी तरह की दुर्गंध नहीं आ रही थी. ठंडी और हल्की हवा ने वातावरण को चारों ओर से खुशनुमा बना दिया था.

तभी बस्ती में रहने वाले एक आदमी ने बच्चों से कहा, ‘‘बच्चो, आप ने हम पर बहुत बड़ा उपकार किया है. हम लोग कल से ठीक से सांस भी नहीं ले पा रहे थे.’’

सभी बच्चों ने विवेक के पापा से कहा, ‘‘धन्यवाद अंकल.’’

तब विवेक ने कहा, मेरे पाप ने कल रात ही बताया था कि 2 दिसंबर, 1984 को भोपाल में गैस कांड की त्रासदी हुई थी. हवा में जहरीली गैस फैल जाने के कारण हजारों लोग मर गए थे. तब राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की स्थापना की गई थी ताकि हवा, पानी और वातावरण को शुद्ध रखा जा सके. तब से इस दिन को राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस के रूप में मनाया जाता है.’’

‘‘अरे वाह,’’ कहते हुए सभी बच्चों ने ताली बजाई.

तब राहुल शिवम की ओर मुड़ा और बोला, ‘‘तुम्हारे दोस्त विवेक ने सचमुच में आज शानदार बौलिंग की है. एक ही बौल में उस ने न केवल मैदान का बल्कि पूरी बस्ती का माहौल बदल दिया.’’

दोनों टीम के खिलाड़ियों ने हंसते हुए एक बार फिर जोरदार ताली बजाई जैसे आज दोनों टीमें जीत गई हैं. इस के बाद फिर क्रिकेट खेलने के लिए टौस किया गया और उन का खेल शुरू हो गया. ●

इस चित्र में कुछ हिस्से खाली रह गए हैं. चित्र को देखें, उन्हें पूरा करें और फिर इन में रंग भरें.

चित्र पूरा करें

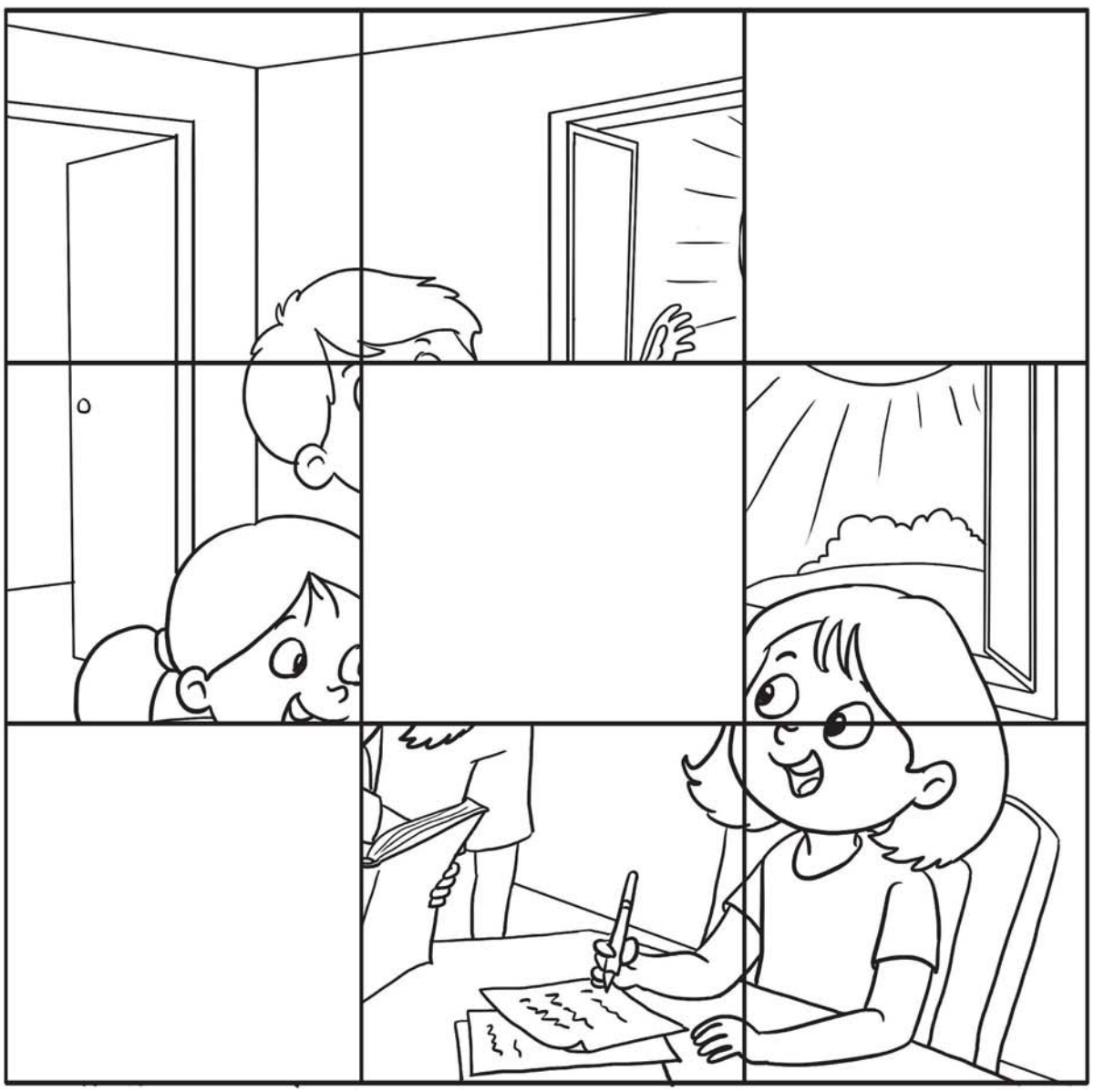

रास्ता बताओ

राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस 14 दिसंबर को मनाया जाता है. लैंप तक जाने में स्पार्की की मदद कीजिए ताकि वह इसे बुझा कर ऊर्जा बचा सके.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

वूलेन कोस्टर

पलक शाह

स्मार्ट

कार्डबोर्ड और वूल यानी ऊन का इस्तेमाल करते हुए एक सामान्य सा कोस्टर बुनें.

आप को चाहिए : ऊन, कार्डबोर्ड, पैंसिल, कैंची.

ऐसे बनाएं :

1. कार्डबोर्ड का इस्तेमाल करते हुए 6 सेंटीमीटर माप का एक वृत्त काट लें. वृत्त के किनारे पर 12 स्लिट यानी दरार बना लें.

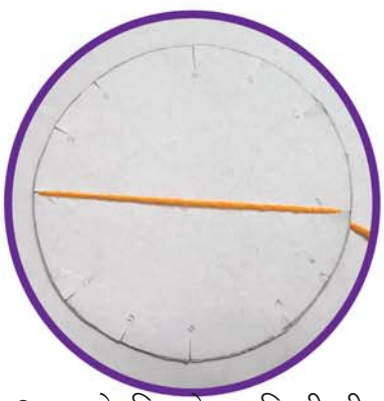

2. वृत्त के किनारे पर किसी भी एक स्लिट में एक औरेंज ऊन के धागे को डाल दें और इसे आरपार कर दें यानी लपेट दें.

3. सभी स्लिट के आरपार ऊनी धागे को तब तक लपेटते रहें जब तक कि वृत्त ढक न जाए जैसा कि चित्र में है. आप को 12 लाइनें प्राप्त होंगी जो केंद्र में एकदूसरे को काटती हैं.

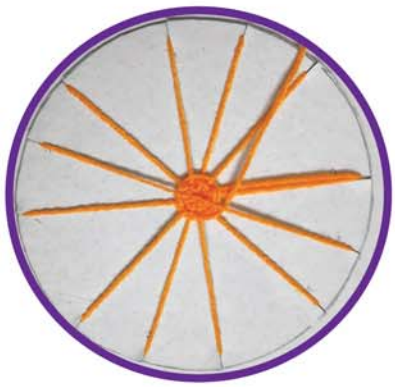

4. धागे को अल्टरनेट लाइन से पार करते जाएं ताकि केंद्र में एक वृत्ताकार पैटर्न बन सके, जैसा कि चित्र में है.

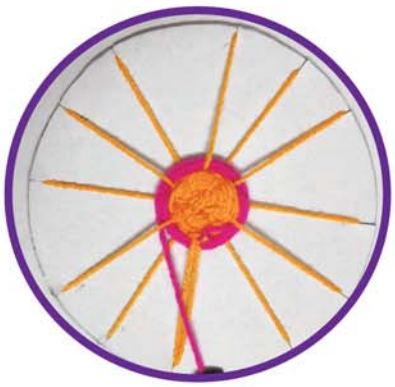

5. एक बार आप वृत्ताकार पैटर्न बना चुकेंगे तो धागे के खुले छोर को दूसरे रंग वाले धागे से बांध दें. वृत्ताकार रूप में इसे बुनना जारी रखें.

6. अन्य रंगों के ऊनी धागे को इसी तरह जोड़ते जाएं और बारीबारी से ज्यादा से ज्यादा पैटर्न बनाने के लिए बुनते रहें.

7. एक बार जब आप वृत्त को पूरा ढक चुके हों तो सावधानी से कार्डबोर्ड से ऊन को अलग कर लें.

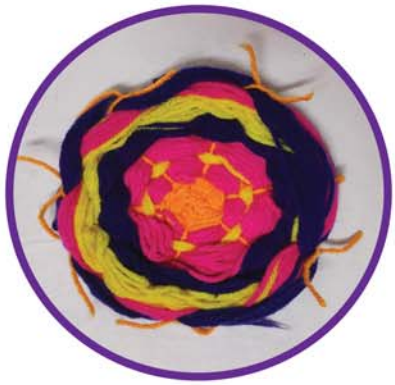

8. औरेंज लूप्स को काटें और कोस्टर को सुनिश्चित करने के लिए बांध दें.

अब आप का वूलेन कोस्टर बन कर तैयार है.

अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रविष्टि **writetochampak@delhipress.in** या एक फोटो खींच कर +91 9619587613 पर भेज दें.

प्रदूषण को मात दें

हरेक वर्ष 2 दिसंबर को भारत में राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस मनाया जाता है. नीचे दिए चित्रों को देखें और पहचान करें कि कौन से कार्य धरती को मुसकराता हुआ या दुखी बनाता है. सही कार्य पर निशान लगाएं.

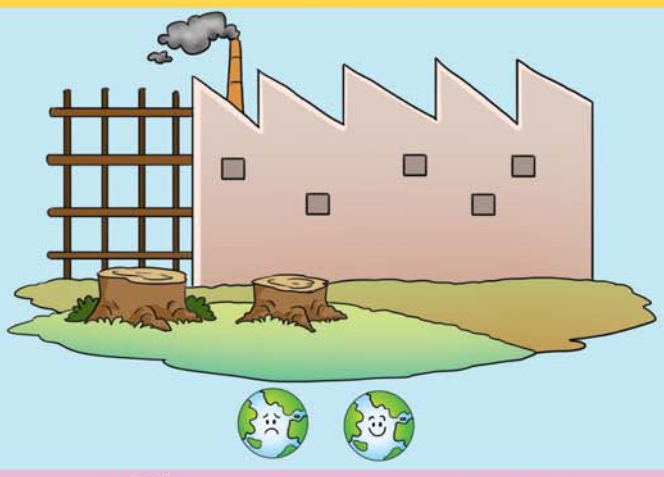

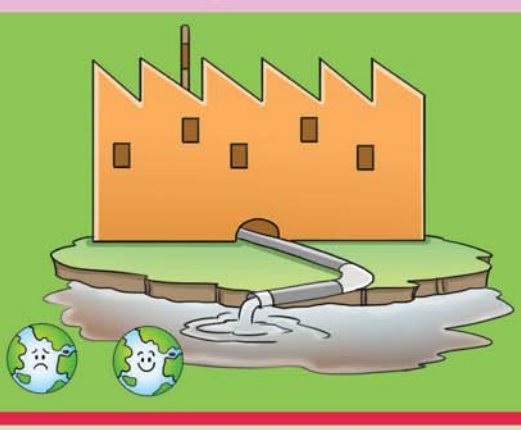

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

आशिनी का बंबलबी बैग

कहानी ● गायत्री कृष्णन

आतिश के लिए इस बार की छुट्टियां सब से ज्यादा निराशाजनक रहीं. ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था. वह अपने घर के चारों ओर चक्कर लगाता या अपनी जुड़वा बहन आशिनी के साथ बेमतलब के झगड़े करता या रसोई में घूमता और बड़बड़ाता रहता था, ‘‘कितना बेकार दिन है, मां. कुछ भी करने के लिए नहीं है,’’ उस ने कहा.

‘‘इस बारे में तुम कई बार शिकायत कर चुके हो, आतिश,’’ मां भी चीख कर बोलीं, ‘‘छुट्टियां अभी खत्म भी नहीं हुई हैं. इस सप्ताह के अंत तक प्रतीक्षा करो और उस के बाद तुम जंगल ट्रैक के लिए आशिनी के साथ जा सकते हो.’’

यह सुन कर आतिश का मन खुशियों से भर गया. वह जंगल ट्रैक के बारे में बिलकुल ही भूल गया था जिस के बारे में उस ने और आशिनी ने बीते महीने ही योजना बनाई थी. वाइल्ड वुड्स जंगल की उन के द्वारा एक ट्रिप की योजना बनाई गई थी. यह विशेष जंगल ट्रैक विभिन्न प्रकार के पक्षियों के लिए प्रसिद्ध था जो वहां रहते थे और बच्चे ट्रैक के लिए उत्साहित रहते थे.

आतिश और आशिनी ने शनिवार की रात ट्रिप के लिए सामान बांधने में बिताया. मां ने वैजिटेबल सैंडविच, एनर्जीबार्स और नींबू पानी की एक बोतल उन के लिए पैक की थी. आतिश ने अपने बैग में

आतिश और आशिनी ने मेनरोड को पार कर जंगल में प्रवेश किया. जंगल में बहुत शांति थी और मौसम भी सुहावना था, क्योंकि बीती रात जंगल में बारिश हुई थी. बच्चे ट्रैकर्स द्वारा छोड़े गए कदमों के निशान पर चलते हुए जंगल में भटक गए. वे दोनों तरफ से झाड़ियों से घिर गए थे और जंगल के पत्तों के मध्य से जंगली फूलों के गुच्छे उन्हें झांक रहे थे.

एक कैमरा और दूरबीन पैक कर लिया, जबकि आशिनी ने अपने पसंदीदा बैग 'बंबल बी' में एक पैंसिल और एक स्केचबुक रख ली. उसे पक्षियों का चित्र बनाने पसंद थे.

''वह बैग फिर से नहीं,'' आतिश ने कहा. ''तुम्हारा वह पुराना बैग इतना चमकीला और पीला है कि पक्षी उसे देख डर कर दूर भाग जाते हैं. तुम इसे फेंक क्यों नहीं देती हो?''

आशिनी ने अपने बैग को कस कर गले से लगा लिया और कहा, ''यह मेरा लकी बैग है, जहां भी मैं जाऊंगी वहां यह जाएगा.''

''घर लौटने से पहले उस बैग से छुटकारा पाने के लिए मेरे पास एक अच्छी योजना है,'' आतिश मंद आवाज में बुदबुदाया.

अगले दिन सुबह पापा और मां ने उन्हें जंगल के प्रवेशद्वार के निकट मेनरोड तक पहुंचाया. मां ने पुराने बरगद के पेड़ के नीचे कार को रोका और बोलीं, ''बच्चो, हम यहीं पेड़ के नीचे इंतजार करेंगे. ट्रैक से हो कर जंगल में जाओ और दो घंटे बाद हमारे पास लौट आना.''

आतिश ने खुशी से चहकती हुई मैना और बुलबुल की फोटो खींची, जबकि आशिनी अपनी स्केचबुक में डूबी हुई थी. बैगनी और संतरी रंग वाले जंगली फूल इतने अधिक लुभावने थे कि इन का चित्रण करना मुश्किल था.

जब आशिनी चित्र बनाने में व्यस्त थी तब आतिश ने उस का बंबलबी बैग जो उस के बगल में रखा था, चुपके से उठा लिया और हवा में ऊपर फेंक दिया. बैग पेड़ की एक डाली से उल्टा लटक गया.

''तुम ने ऐसा क्यों किया? तुम जानते हो न कि वह मेरा पसंदीदा बैग था,'' आशिनी गुस्से में चिल्लाई. उस ने अपने बैग को फिर से पाने के लिए कूदने की कोशिश की, लेकिन पेड़ की डाली काफी ऊंची थी जहां वह पहुंच नहीं सकी.

''मैं जानता हूं कि वह एक बकवास बैग था और उसे अब यहीं रहना चाहिए,'' आगे बढ़ते हुए आतिश हंस पड़ा.

आशिनी बड़बड़ाई और बेमन से उस के पीछे चलने लगी. वे जंगल में बहुत अंदर तक मंत्रमुग्ध हो कर ट्रैकिंग करते चले गए. जंगल की खूबसूरती में वे खोते चले गए और यह बात भूल गए कि उन के

मम्मीपापा बाहर उन का इंतजार कर रहे हैं.

‘‘आतिश, घड़ी में समय देखो. दो घंटे होने वाले हैं, हमें कार के पास लौटना होगा.’’

‘‘ओह,’’ अपनी शर्ट से सैंडविच के टुकड़ों को साफ करते हुए आतिश ने कहा.

‘‘अच्छा रहेगा कि हम अपने पदचिन्हों पर वापस चलें.’’

लेकिन कदमों के निशान को पहचानना मुश्किल काम था. वे नहीं जानते थे कि किस रास्ते से वे आगे बढ़े थे.

‘‘आतिश, मुझे लगता है कि हम रास्ता भटक गए हैं,’’ आशिनी ने कहा. उस की आवाज कांप रही थी. ‘‘हम ने कभी भी अपने रास्ते को चिन्हित करने की जहमत नहीं उठाई. क्या तुम पापा को फोन करोगे कि वे हमारी मदद के लिए आएं?’’

‘‘अरे, नहीं, मेरे मोबाइल की बैटरी खत्म हो गई है. मैं कल रात गेम खेल रहा था और इसे चार्ज करना भूल गया था,’’ आतिश ने अपने मोबाइल फोन को परखते हुए कहा. ‘‘मैं इतना लापरवाह कैसे हो गया हूं. खैर, मैं नहीं चाहता कि हम कोई रैंडम रास्ता अपनाएं और जंगल में खो जाएं. अब हम क्या करें?’’

‘‘मुझे एक रास्ता पता है,’’ आशिनी ने कहा.

‘‘वहां देखो,’’ आशिनी ने इशारा किया.

आतिश ने उस ओर देखा जिधर आशिनी ने इशारा किया था. उस ने एक डाल पर पीले बंबलबी बैग को झूलते हुए देखा.

‘‘मैं ने तुम से कहा था न कि बंबलबी मेरा लकी बैग है. हमें उस रास्ते पर आगे बढ़ना है जो हमें बंबलबी तक ले जाएगा और जैसे ही तुम मेरे बैग को फिर से प्राप्त कर लोगे, हम फिर आसानी से मेनरोड तक पहुंच जाएंगे,’’ आशिनी ने मुसकराते हुए कहा.

जल्दी ही बच्चे मेनरोड पर आ गए थे जहां मम्मीपापा उन का इंतजार कर रहे थे.

‘‘अरे बच्चो, तुम कुछ ही मिनट लेट हो,’’ पापा ने कहा.

‘‘मुझे उम्मीद है, तुम अपना रास्ता नहीं भटके होंगे.’’

‘‘हम अपना रास्ता भूल गए होते अगर यह बंबलबी बैग नहीं होता,’’ पुराने चमकीले पीले बैग को कस कर गले से लगाते हुए आशिनी ने कहा.

‘‘मैं ने अभीअभी सीखा है कि हमें छोटी सी छोटी बात पर भी ध्यान देना चाहिए. छोटी सी छोटी चीज भी हमारे काम लायक हो सकती है.’’ ●

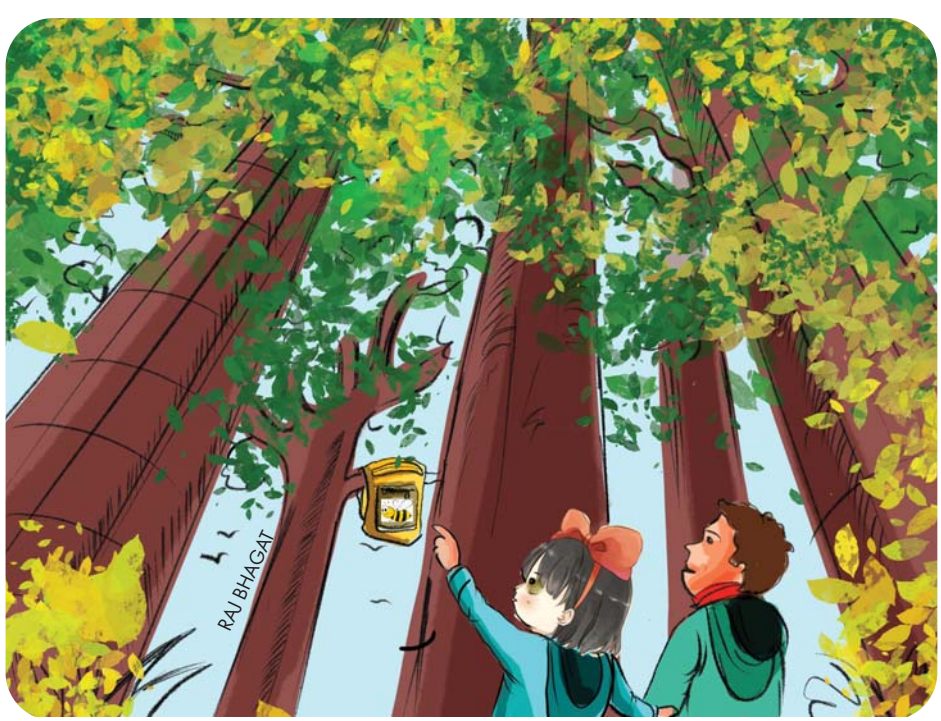

दादाजी और विश्व विकलांगता दिवस

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

राहुल गिर गया और उस के घुटने में चोट लग गई.

दादाजी, यह बहुत दर्द कर रहा है. मुझे ऐसा लग रहा है कि अब मैं कभी खड़ा नहीं हो सकूंगा.

यह तो हल्की सी चोट लगी है. चिंता मत करो. तुम्हारे साथ कुछ नहीं हुआ है.

रिया, अगर तुम्हें चोट लगी होती तो तुम्हें पता चलता कि यह कितना दर्द कर रहा है. मुझे नहीं लगता कि अब मैं आगे फिर कभी फुटबौल खेल सकूंगा.

तुम इतने कमजोर हो, राहुल?

राहुल, तुम सोचते हो कि तुम खड़े नहीं हो सकोगे या फुटबौल नहीं खेल पाओगे? ऐसा तुम्हारे घायल हो जाने से नहीं बल्कि तुम्हारी कमजोर इच्छाशक्ति की वजह से हो रहा है.

राहुल, क्या तुम ने अरुणिमा सिन्हा या देवेंद्र झाजारिया का नाम सुना है?

वे कौन हैं, दादाजी?

हां, सफलता उन्हीं को मिलती है जो कठोर परिश्रम करने की इच्छा रखते हैं और जीतने के लिए अपने मन को दृढ़ बनाते हैं. राहुल ने अपने मन में यह बात बैठा ली कि अब वह आगे फिर कभी खड़ा नहीं हो सकेगा.

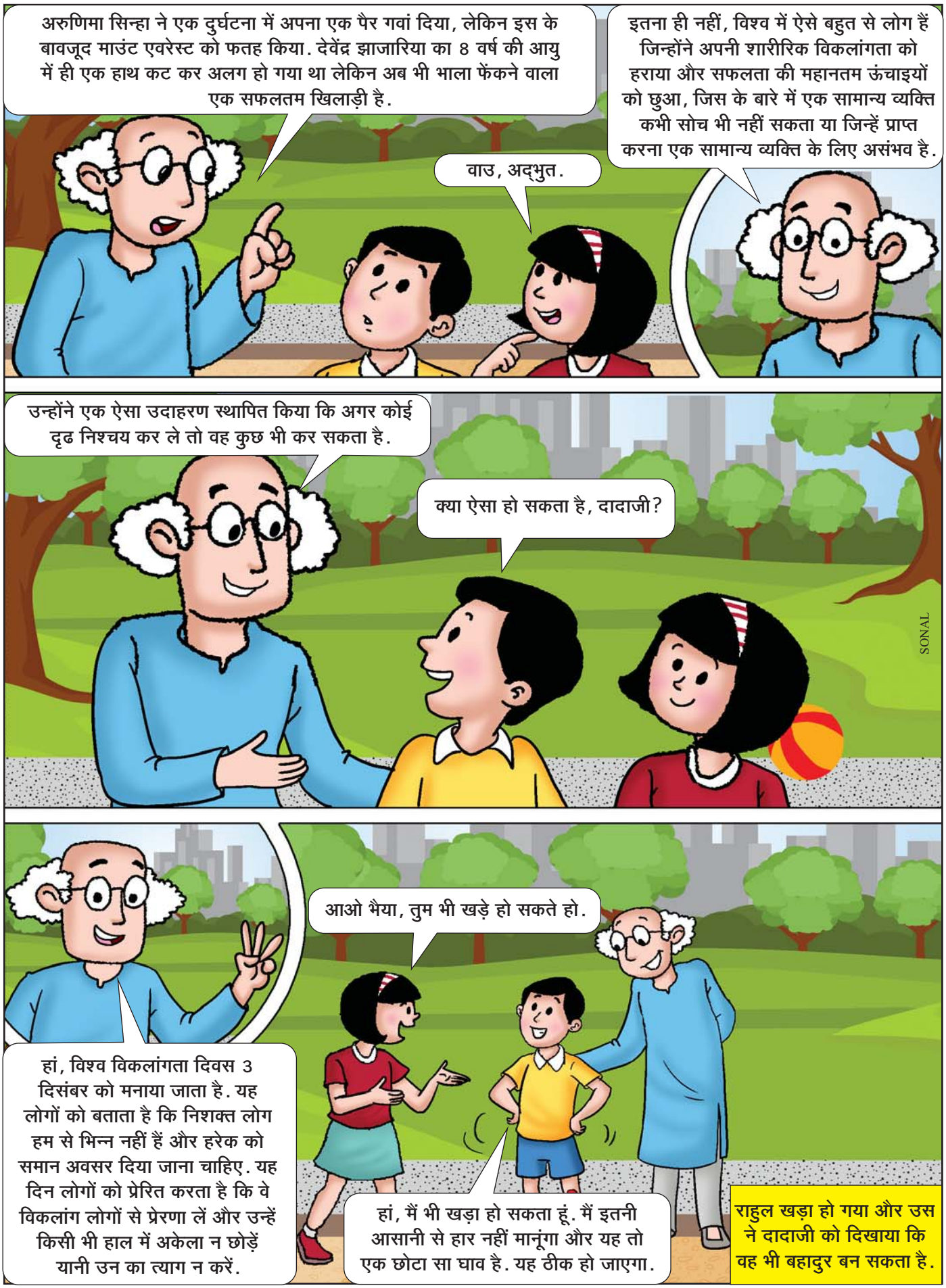
अरुणिमा सिन्हा ने एक दुर्घटना में अपना एक पैर गवां दिया, लेकिन इस के बावजूद माउंट एवरेस्ट को फतह किया. देवेंद्र झाजारिया का 8 वर्ष की आयु में ही एक हाथ कट कर अलग हो गया था लेकिन अब भी भाला फेंकने वाला एक सफलतम खिलाड़ी है.
इतना ही नहीं, विश्व में ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने अपनी शारीरिक विकलांगता को हराया और सफलता की महानतम ऊंचाइयों को छुआ, जिस के बारे में एक सामान्य व्यक्ति कभी सोच भी नहीं सकता या जिन्हें प्राप्त करना एक सामान्य व्यक्ति के लिए असंभव है.
वाउ, अद्भुत.
उन्होंने एक ऐसा उदाहरण स्थापित किया कि अगर कोई दृढ निश्चय कर ले तो वह कुछ भी कर सकता है.
क्या ऐसा हो सकता है, दादाजी?
SONAL
आओ भैया, तुम भी खड़े हो सकते हो.
हां, विश्व विकलांगता दिवस 3 दिसंबर को मनाया जाता है. यह लोगों को बताता है कि निशक्त लोग हम से भिन्न नहीं हैं और हरेक को समान अवसर दिया जाना चाहिए. यह दिन लोगों को प्रेरित करता है कि वे विकलांग लोगों से प्रेरणा लें और उन्हें किसी भी हाल में अकेला न छोड़ें यानी उन का त्याग न करें.
हां, मैं भी खड़ा हो सकता हूं. मैं इतनी आसानी से हार नहीं मानूंगा और यह तो एक छोटा सा घाव है. यह ठीक हो जाएगा.
राहुल खड़ा हो गया और उस ने दादाजी को दिखाया कि वह भी बहादुर बन सकता है.

नन्ही कलम से

चांद

मैं आसमान में बहुत तेज चमकता हूं. मेरे साथ ही बहुत ऊंचे नन्हेनन्हे तारे टिमटिमाते हैं. मैं सफेद हूं और मेरे अलगअलग आकार हैं, जैसे कि चंद्राकार, उभरा हुआ, आधा और पूर्ण. क्या तुम जानते हो, मैं कौन हूं. मैं पृथ्वी का प्राकृतिक उपग्रह चंद्रमा यानी चांद हूं.

ज्योथिका जायेन, 9 वर्ष
तमिलनाडु

अनुश्री पांडे, 9 वर्ष
पुणे

सक्षम काथ, 12 वर्ष
जम्मू

मेरी छोटी बहन

उसे हंसना और खेलना पसंद है. दिनभर पंखे को देखना भी पसंद है. वह अपने मुंह में अपने हाथ डाल देती है और हवा में अपने पैर मारती है, ऐसा करते समय उसे किसी सावधानी की चिंता नहीं होती. उस के नन्हे पैर चलना चाहते हैं. वह हर जगह भटकना चाहती है. ऊपर और नीचे सीढ़ियों पर आनाजाना चाहती है. वह हर समय मजे और खुशियों से भरी हुई होती है. मैं अपनी नन्ही बहन को प्यार करती हूं. वह भी मुझे प्यार करती है. हमारा बंधन हमेशा का है.

आर. सहाना, 11 वर्ष
चैन्नई

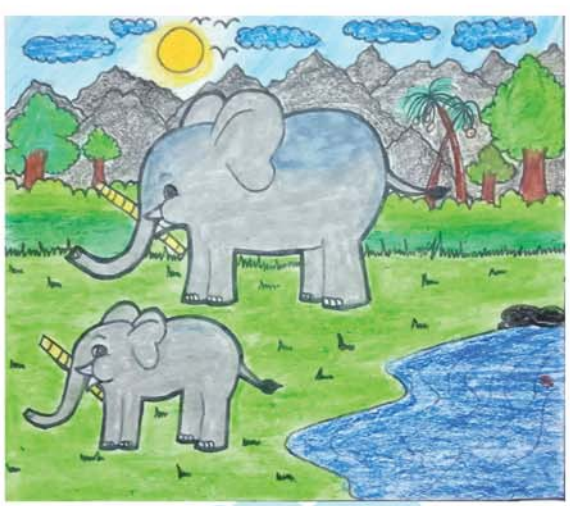

विवान कौशिक, 12 वर्ष
नोएडा

दृष्टि भाटिया, 10 वर्ष

छायामित्र

एक दोस्त है जो हमारा अनुसरण करता है, लेकिन वह हमारे साथ कभी नहीं रहता. जब तक अंधेरा सब जगह फैल नहीं जाता तब तक क्या तुम उस का अंदाजा लगा सकते हो? वह है हमारा छायामित्र. वह वही करता है जो हम करते हैं. वह उसी रास्ते पर चलता है जिस पर हम जाते हैं. वह दीवारों पर हर जगह है. फर्श पर यहां तक कि टेबल पर भी है. उस की कमजोरी अंधेरा है लेकिन वह एक सच्चा दोस्त है. अगर हम गलती करें तो वह भी गलती करता है. अगर हम अच्छा करेंगे तो वह भी अच्छा करेगा. वह है हमारा छायामित्र. लेकिन मेरे लिए वह एक सच्चा मित्र है. तुम भी उसे महसूस कर सकते हो. हर व्यक्ति की एक छाया होती है. वह एक दोस्त की तरह है. एक छायामित्र है.

एंथोनी बाबू स्लेक्स, 9 वर्ष
केरल

सिद्धी अल्पेशभाई मोदी, 12 वर्ष
गुजरात

क्वारंटाइन

क्वारंटाइन के बाद बहुत दिन बीत गए हैं. हम अपने घरों में सोयाबीन खा कर रह रहे हैं. जब हम बारिश में खेलने के लिए बाहर गए थे इस ने सबकुछ बेकार कर दिया है. हमारे पास नई चीजें सीखने के लिए बहुत समय था. लेकिन बहुतों ने तो सिर्फ दवाइयों के इस्तेमाल में ही समय बिता दिया, जिस से खर्च बढ़ गया. हर कोई हमारे घर में ही टिका रहा. हम फोन के साथ खेले और मास्क पहने रहे, यही हमें दिया गया काम था. हम अपने हाथों को धोते थे, अपने आसपास साफसफाई रखते थे. एकसाथ हम वायरस के खिलाफ लड़ाई लड़ सकते हैं. कोरोना वायरस तो सिर्फ एक शब्द है.

श्रीया सरवन, 13 वर्ष
कोयंबटूर

काव्या गुप्ता, 9 वर्ष
अहमदाबाद

यह एक फूल है जिसे हमारी 9 वर्षीय पाठिका ग्रीष्मा डी वशिष्ट ने बैंगलुरु से बना कर भेजा है.

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:

चंपक, दिल्ली प्रैस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई- 400031

writetochampak@delhipress.in 9619587613

www.facebook.com/ChampakMagazine

http://www.youtube.com/ChampakSciQ

हम आप की सामग्री लौटा नहीं सकते इसलिए हमें भेजी सामग्री की कापी अपने पास रखें.

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.

हमारे और उन के लक्षण

काला भालू कोमल प्राणी होता है जो एक से अधिकतर मानव के समान होता है. वैज्ञानिकों ने मनुष्य और भालू के बीच कई सामान्य गुण और लक्षणों का पता लगाया है. यह प्राणी जार खोल सकता है और दरवाजे की कुंडी भी खोल सकता है.

वह मनुष्य जैसा ही समान गति से दौड़ और चल भी सकता है. वे जल्दी सीखने वाले प्राणी है. वह आकार और रंग के बीच के फर्क को भी समझ सकता है.

मां भालू अपने युवा साथी के साथ स्नेही, सुरक्षात्मक समर्पित, सख्त, संवेदनशील और हर वक्त चौकस रहता है. वे सहानुभुतिपूर्ण, भयभीत और आनंदित भी होते हैं. वह एकसाथ खेलता है और शरीर की भावभंगिमा, ध्वनि और महक का उपयोग कर संवाद करता है.

हालांकि एक लक्षण काले भालू को मनुष्य से अलग करता है, वह है उन के हाइबरनेट यानी शीतनिद्रा में जाने की उन की क्षमता. वह अपनी मांद में आठ महीने के तक स्थिर पड़ा रह सकता है वह सामान्यतौर पर शीत ऋतु में शीतनिद्रा में चला जाता है यानी हाइबरनेट की अवस्था में जाता है.

उसे काला भालू कहा जा सकता है लेकिन उस का कोट नीला ग्रे या नीला काला, भूरा और कभीकभी सफेद भी हो सकता है.

पर्वत की ऊंचाई मापें

11 दिसंबर को अंतर्राष्ट्रीय पर्वतीय दिवस है. यहां पर पर्वत के शिखर पर चढ़ने के लिए आप के पास एक मौका है. मैथ्स के प्रौब्लम्स को तल से हल करना शुरू करें और शिखर पर पहुंचें.

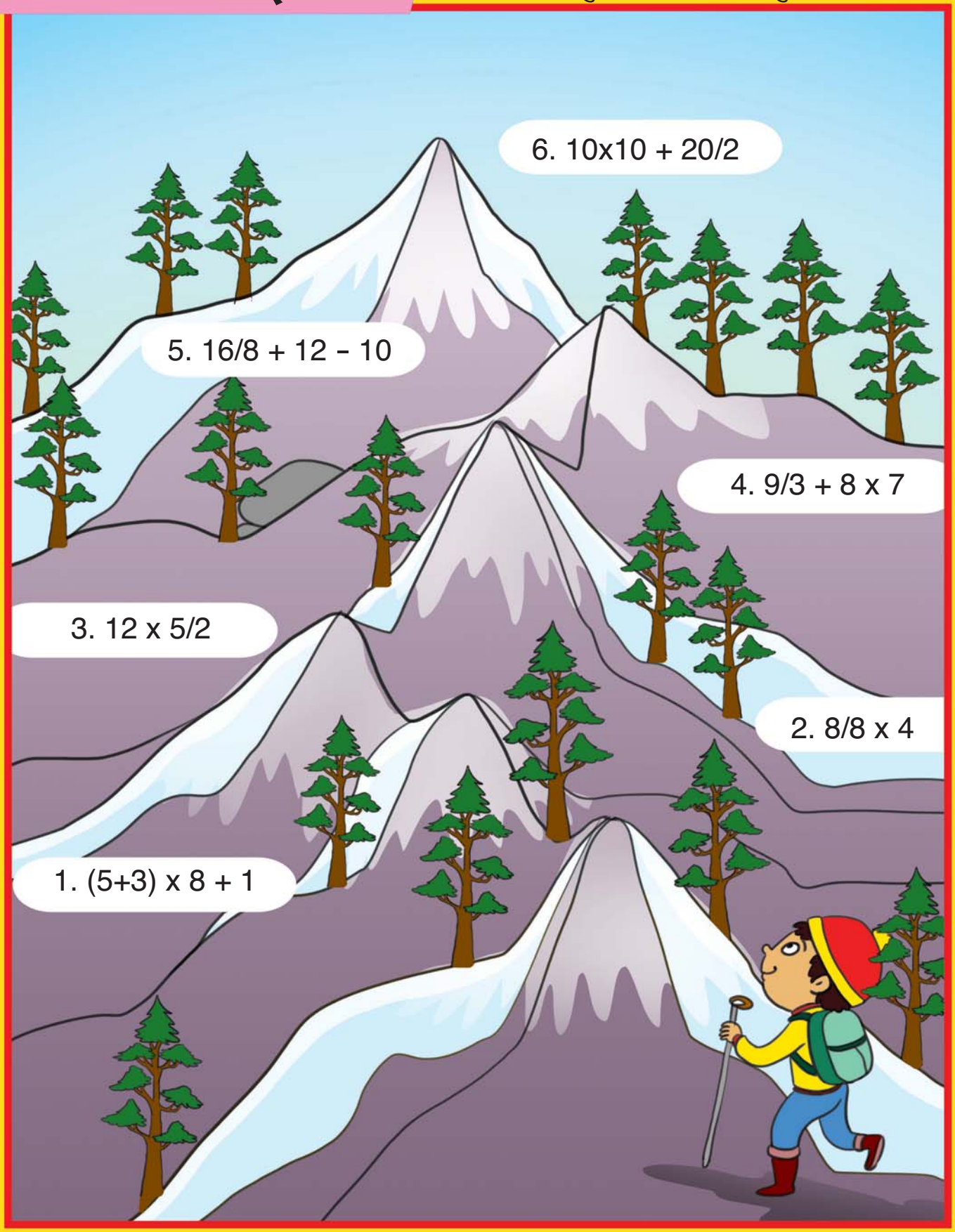

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

सही खजाना

कहानी ● मनोज राय

जस्टिन बैल बहुत आलसी था और वह कोई भी काम नहीं करता था. इस तरह वह अपना दिन फांके में गुजार रहा था. वह बिना काम किए ही रातोंरात अमीर बन जाने का सपना देखता था. उस के दोस्त उसे काम करने के लिए समझाने की कोशिश करते, लेकिन वह अपने आलसी स्वभाव में बदलाव लाने से साफ मना कर देता था.

एक दिन सुबह जब वह अपने घर से बाहर निकला तो दरवाजे के बाहर लाल रंग के एक कागज के टुकड़े पर उस की नजर पड़ी.

''यह क्या है?'' हैरान हो कर उस ने उस टुकड़े को उठा लिया.

''अरे वाह, यह किसी खजाने को पाने का नक्शा लग रहा है,'' उस के मुंह से निकला.

जस्टिन घर के अंदर चला गया और कागज को आराम से पढ़ने लगा. कागज पर लिखा था, ''जो उस पहाड़ी के रास्ते की जमीन को समतल बनाएगा उसे यह खजाना मिलेगा. एक ऐसा खजाना जो कभी खत्म नहीं होगा.''

जस्टिन खजाने की बात जान कर बहुत खुश हुआ, लेकिन इसे पाने की शर्त से उसे परेशानी हो रही थी.

'वह रास्ता तो बहुत ही ऊबड़खाबड़ है. इसे अकेले समतल करने में तो काफी दिन लग जाएंगे. क्यों न किसी की मदद ली जाए,' उस ने सोचा.

उसे काहिन भालू का खयाल आया.

''हां, काहिन अच्छा रहेगा. उसे भी पैसों की सख्त जरूरत है और वह भी दिनभर खाली बैठा रहता है. मुझे उस से बात करनी चाहिए,'' उस ने सोचा.

''क्या तुम्हें पूरा यकीन है कि वहां खजाना छिपा हुआ है?,'' काहिन ने जब सवाल किया तो जस्टिन एक पल के लिए अचकचा गया.

लेकिन तुरंत उस ने खुद को संभालते हुए कहा, ''अगर खजाना नहीं भी मिला तो क्या होगा? हम दोनों को उस रास्ते को समतल करने में एक सप्ताह का ही समय लगेगा. मिला तो ठीक नहीं तो सबकुछ भूल जाएंगे.''

काहिन राजी हो गया, क्योंकि उसे जस्टिन की बात तर्कपूर्ण लगी.

फिर क्या था? दोनों अपनेअपने औजार ले कर उस स्थान पर पहुंच गए जिस के बारे में कागज के टुकड़े पर लिखा हुआ था. वे सुबह से शाम तक काम करने में लगे रहे. पहले तो उन्हें यह काम करना पहाड़ के जैसा लग रहा था क्योंकि वे अब तक आलस्य में ही अपने दिन गुजारते आए थे, लेकिन अब वे सुबहसुबह ही नाश्ता करने के बाद काम करने वहां पहुंच जाते और शाम काफी देर बाद घर आते थे.

धीरेधीरे उन की मेहनत रंग लाई. एक सप्ताह में ही उस इलाके की सूरत बदल गई. अब ऊबड़खाबड़ पत्थरीली जमीन समतल हो कर पहाड़ की ओर जा रही थी.

‘‘हम ने तो अपना काम पूरा कर दिया है लेकिन हमें खजाना कौन देने जा रहा है?’’ काहिन ने पूछा.

जस्टिन को इस सवाल का कोई जवाब नहीं सूझा. ‘‘तुम सही कह रहे हो. उस कागज में दिए निर्देशों के अनुसार हम ने तो अपना काम कर दिया है, लेकिन खजाना कहां है?’’ उस ने कहा.

‘‘खजाना यहां है,’’ अचानक पीछे से आवाज आई तो दोनों हैरान रह गए. दोनों देखा वहां रिद्धेश खरगोश खड़ा था.

‘‘अरे रिद्धेश, यह तुम हो? तुम यहां क्या कर रहे हो?’’ जस्टिन ने पूछा.

‘‘मैं यहां तुम्हारा खजाना तुम्हें देने आया हूं. तुम दोनों ने कठोर मेहनत की है और तुम दोनों निश्चय ही खजाने के हकदार हो,’’ रिद्धेश ने हंसते हुए कहा.

वे दोनों समझ नहीं पाए कि क्या होने वाला था. ‘‘इस जमीन को समतल करने के लिए हमें बलवान जानवरों की जरूरत थी. मैं ने तुम दोनों को देखा कि काफी लंबे समय से निठल्ले बैठे समय गुजार रहे

हो. कोई मेहनत का काम क्यों नहीं करते. तब मैं ने तुम दोनों से इस सड़क को बनवाने की योजना बनाई. मुझे पता था कि इस बारे में तुम्हें बोलूंगा तो तुम दोनों कभी तैयार नहीं होगे. इसलिए खजाने की कहानी गढ़नी पड़ी,’’ रिद्धेश ने विस्तार से बताया.

‘‘तो इस का मतलब यह हुआ कि यहां कोई खजाना नहीं है?’’ काहिन ने उदास हो कर पूछा.

‘‘परेशान मत हो. तुम्हारी मेहनत बेकार नहीं जाएगी,’’ रिद्धेश ने काहिन के कंधे पर हाथ रख कर आश्वासन दिया.

‘‘यह लो,’’ कहते हुए उस ने उन्हें एक लिफाफा पकड़ाया.

‘‘अब इस लिफाफे में क्या है?’’ जस्टिन झल्लाया.

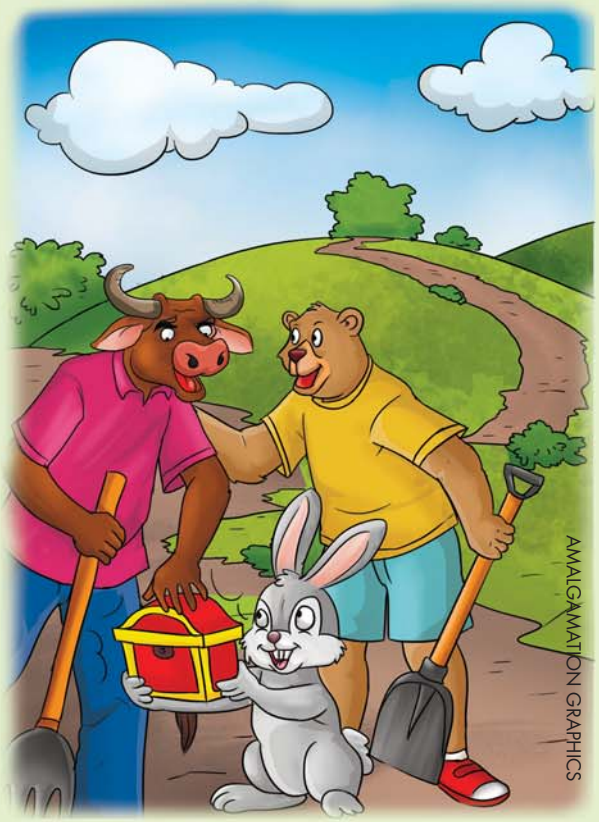

''इस में 30 हजार रुपए हैं, जो इस काम के बदले में मिलने वाले थे. तुम दोनों इसे आपस में बांट लेना और अगर तुम दोनों तैयार हो तो मेरे पास एक दूसरा खजाना है जिस के बारे में तुम से बात करनी है. यह खजाना 50 हजार रुपए का है. इसलिए तुम दोनों मुझ से इस के लिए दो दिन बाद मिलना,'' रिद्धेश ने कहा.

जस्टिन और काहिन एकदूसरे का मुंह देखने लगे.

''दो दिन बाद नहीं, हम एक दिन बाद ही तुम्हारे पास आ जाएंगे,'' काहिन ने तपाक से कहा.

''एक दिन बाद ही क्यों?'' रिद्धेश ने हैरानी से पूछा.

''ऐसा इसलिए कि हमें चिंता हो रही है कि अगर हम ज्यादा दिनों तक आराम करेंगे तो आलसी हो जाएंगे,'' जस्टिन और काहिन एकसाथ बोले.

उन की बात सुन कर रिद्धेश मुसकरा दिया. यही वह सही खजाना था जिसे उन्होंने कमाया था. ●

उत्तर पृष्ठ :

पृष्ठ 35 : रास्ता बताओ :

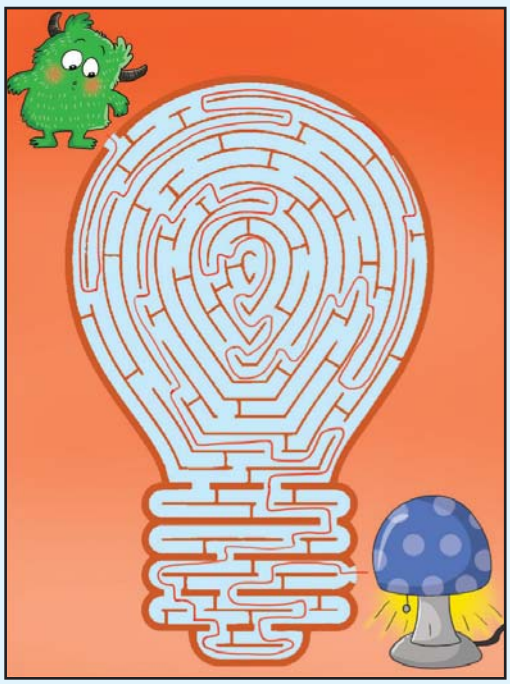

पृष्ठ 38 : प्रदूषण को मात दें :

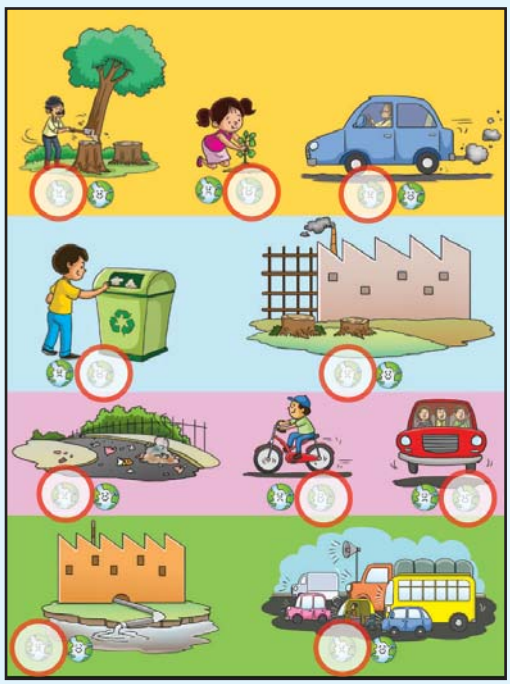

पृष्ठ 47 : पर्वत की ऊंचाई मापें :

1 - 65	4 - 77
2 - 4	5 - 4
3 - 30	6 - 60

WE SPEAK IN 30 DIFFERENT CONSUMER VOICES.

BECAUSE EVERY BRAND IS UNIQUE.

With virtually every age group, income segment and language covering 30 million Indians, we are the most diverse magazine group in India. So next time you want to address anyone in India, you are better off speaking to the **Delhi Press** Group today.

DELHI PRESS

To subscribe to our magazines Call/SMS/WhatsApp: 08588843408,
E-mail: subscription@delhipress.in, You can also subscribe online at www.delhipress.in/subscribe

THE CARAVAN · CHAMPAK · सरिता · गृहशोभा · चंपक · मुक्ता · सरस सलिल · फार्मफूड · सत्यकथा · मनोहर कहानियां

ગૃહશોભા · ચંપક · सरस सलिल · गृहशोभिका · চাঁপক · সরস সলিল · গৃহশোভা · ജ്യോതി · சம்பக் · சார்ல் · ગૃહશોભા · ചിങ്കാരി

ಗೃಹಶೋಭಾ · ಗೃಹಶೋಭಾ · சுமைக் · સલિલ · చంపక్ · Highlights CHAMPS · Highlights Genies · MOTORING WORLD

(REGISTERED) RNI 16420/68 DL(C)-14/1093/2018-20 WPP U(C)148/40/2018-20 P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 02 to 08 Published on 26/11/2020. Pgs. 52

PARLE®

POPPINS®

Fruit Flavoured Rolls

Naya Rangeela Pack,
Wahi Mazedar Swaad

*Creative visualisation. Actual candy colours may vary.